RNI No. 62592/95
email: u.p.observer@gmail.com

# यू.पी.ऑब्ज़र्वर

साप्ताहिक

मोदीनगर (गाजियाबाद) वर्ष : 32 अंक : 11 सोमवार 16 से 22 जून, 2025 पृष्ठ: 8 मूल्य : ₹3/=

खेती में प्राकृतिक इनपुट का उपयोग करें... ...3

# यूपी में परिवर्तनकारी युग लेकर आया योगी जी का शासनकाल: अमित शाह

## 60,244 नवनियुक्त पुलिस कार्मिकों के नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में शामिल हुए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह

**यू.पी. ऑब्ज़र्वर**

**लखनऊ।** केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह की मौजूदगी में रविवार को लखनऊ के वृंदावन योजना, सेक्टर 18 स्थित डिफेंस एक्स्पो ग्राउंड में आयोजित एक भव्य समारोह में 60,244 नवनियुक्त पुलिस कार्मिकों को नियुक्तिपत्र वितरित किये गये। इस ऐतिहासिक आयोजन में अपने संबोधन में अमित शाह ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पारदर्शी और समावेशी भर्ती प्रक्रिया के लिए जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि योगी जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश पुलिस ने न केवल भर्ती प्रक्रिया को निष्पक्ष और योग्यता आधारित बनाया, बल्कि हर जाति, जिले और तहसील के युवाओं को अवसर प्रदान कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। शाह ने विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया कि इन नियुक्तियों में न खर्च, न पर्ची, न शिफारिश और न ही जाति के आधार पर कोई भेदभाव हुआ, बल्कि पूरी प्रक्रिया पारदर्शी और योग्यता के आधार पर संपन्न हुई।

### यूपी पुलिस देश का सबसे बड़ा पुलिसबल

अमित शाह ने अपने संबोधन में कहा कि उत्तर प्रदेश पुलिस देश का सबसे बड़ा पुलिसबल है और आज 60,244 युवा इसके अभिन्न अंग बन रहे हैं। उन्होंने इस दिन को नवनियुक्त कार्मिकों के जीवन का सबसे शुभ दिन करार देते हुए कहा कि यह गौरव का क्षण है। शाह ने बताया कि इनमें 12 हजार से अधिक बेटियां भी शामिल हैं, जिनके चेहरों पर खुशी देखकर उन्हें अपार सुकून मिला। उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिए आरक्षित पदों का

### एक नजर

- अमित शाह ने की यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पारदर्शी और समावेशी भर्ती प्रक्रिया की जमकर सराहना
- बोले अमित शाह- 60,244 युवाओं में से किसी को भी एक पाई की रिश्वत नहीं देनी पड़ी

शत-प्रतिशत लाभ उत्तर प्रदेश में सुनिश्चित किया गया है, जो योगी सरकार की एक बड़ी उपलब्धि है।

### पारदर्शी भर्ती और तकनीक के योगदान की सराहना

केंद्रीय गृह मंत्री ने भर्ती प्रक्रिया की पारदर्शिता पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि तकनीक के उपयोग, जैसे कि कैमरे, कंट्रोल रूम, कमांड सेंटर, पीसीआर वैन और 150 से अधिक ऑन-व्हील फॉरेंसिक साइंस लैब वैन ने इस प्रक्रिया को और निष्पक्ष बनाया है। शाह ने दावा किया कि 60,244 युवाओं में से किसी को भी एक पाई की रिश्वत नहीं देनी पड़ी, जो किसी भी शासन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि यह भर्ती प्रक्रिया न केवल पारदर्शी थी, बल्कि इसमें हर वर्ग और क्षेत्र का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया।

### पुलिसबल का आधुनिकीकरण और नए कानून की चर्चा

शाह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में पुलिसबल के आधुनिकीकरण की दिशा में किए गए प्रयासों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, और भारतीय साक्ष्य संहिता जैसे नए कानूनों के लागू होने से अगले पांच वर्षों में देश में ऐसी व्यवस्था बनेगी, जिसमें किसी भी एफआईआर से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक का न्याय तीन साल के भीतर मिल सकेगा। इसके अलावा, सीसीटीएनएस (क्राइम एंड क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क एंड सिस्टम्स), आईसीजेएस (इंटर-ऑपरेबल क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम) और फॉरेंसिक साइंस जैसी तकनीकों ने पुलिस व्यवस्था को और मजबूत किया है।

### यूपी पुलिस के लिए गृहमंत्री का संदेश

अंत में, अमित शाह ने यूपी पुलिस के नवनियुक्त कार्मिकों से पूरे मन से सेवा करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि करीब चार लाख सदस्यों वाले इस पुलिसबल का हिस्सा बनना गर्व की बात है। उन्होंने योगी आदित्यनाथ को एक बार फिर धन्यवाद देते हुए कहा कि उनकी पारदर्शी और समावेशी नीतियों ने यूपी पुलिस को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है।

### भारत का हुआ आर्थिक और सामाजिक उत्थान

अमित शाह ने अपने संबोधन में देश के आर्थिक और सामाजिक प्रगति पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पिछले 11 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं और 60 करोड़ लोगों को गैस सिलेंडर, शौचालय, नल से जल, मुफ्त इलाज और किसानों को आर्थिक सहायता जैसी योजनाओं का लाभ मिला है। उन्होंने बताया कि 2014 में भारत विश्व की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था, लेकिन आज यह चौथे स्थान पर है और 2027 तक यह तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगा। शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने 143 से अधिक शहरों में मेट्रो ट्रेन, 150 से अधिक हवाई अड्डे, और नई शिक्षा नीति जैसे कदमों से हर युवा को अवसर प्रदान किए हैं।

### इन 15 नवनियुक्त आरक्षियों को गृहमंत्री ने वितरित किया नियुक्ति पत्र

सत्यम नायक, प्रेम सागर, शालिनी शाक्य, उपेन्द्र कुमार यादव, शिल्पा सिंह, दीनू बाबू, योगेन्द्र सिंह, शिवांश पटेल, मनीष त्रिपाठी, रोशन जहां, आजाद कुशवाहा, मिथिलेश भट्ट, सोनी रावत, नेहा गोंड, सचिन सैनी को गृहमंत्री अमित शाह ने नियुक्ति पत्र वितरित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दोनों डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेन्द्र सिंह, मंत्रीगण, मुख्य सचिव, डीजीपी, पुलिस अधिकारीगण सहित सभी 75 जनपदों के 826 विकासखंडों और 762 नगर निकायों से संबंधित यूपी पुलिस का हिस्सा बन रहे 60,244 नवनियुक्त आरक्षीगण मौजूद रहे।

### नक्सलवाद और आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस

शाह ने नक्सलवाद और आतंकवाद के खिलाफ सरकार की सख्त नीति की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि 11 राज्यों में फैला नक्सलवाद अब केवल तीन जिलों तक सीमित रह गया है, और 31 मार्च 2026 तक भारत पूरी तरह नक्सलवाद मुक्त हो जाएगा। आतंकवाद के खिलाफ भी मोदी सरकार ने कड़ा रुख अपनाया है। शाह ने कहा कि पाकिस्तान द्वारा तीन बार आतंकी हमलों का प्रयास किया गया, लेकिन भारत ने हर बार मुंहतोड़ जवाब दिया और आतंकियों के ठिकानों को नष्ट किया। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र करते हुए कहा कि भारतीय वायुसेना ने आतंकियों के मुख्यालयों को चूर-चूर कर दिया।

### अमृत काल में यूपी पुलिस की भूमिका की चर्चा

अमित शाह ने नवनियुक्त कार्मिकों से कहा कि वे अमृत काल में यूपी पुलिस का हिस्सा बन रहे हैं और 2047 तक जब भारत विश्व में सर्वप्रथम स्थान पर होगा, तब यूपी का योगदान सबसे बड़ा होगा। उन्होंने युवाओं से सुरक्षा, सेवा और संवेदनशीलता के मंत्र के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। शाह ने कहा कि यूपी पुलिस का डर गुंडों और माफियाओं पर सख्त होना चाहिए, लेकिन गरीब, पिछड़े, और आदिवासी समुदायों के लिए पुलिस को मसीहा के रूप में दिखना चाहिए। शाह ने अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा, काशी में विश्वनाथ धाम के पुनरुद्धार, ट्रिपल तलाक की समाप्ति और नए वक्फ कानून जैसे सांस्कृतिक और सामाजिक सुधारों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि भारत ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचकर इतिहास रचा और उस स्थान को शिव शक्ति नाम दिया गया।

### योगी सरकार के तहत कानून व्यवस्था में हुआ सुधार

शाह ने उत्तर प्रदेश में 2017 के बाद आए बदलावों की चर्चा करते हुए कहा कि आजादी के बाद से उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था लगातार बिगड़ती रही थी, लेकिन 2017 में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा सरकार बनने के बाद यूपी पुलिस ने नई बुलंदियों को छूना शुरू किया। उन्होंने कहा कि योगी जी ने औद्योगिक विकास, शिक्षा, कानून व्यवस्था, बुनियादी ढांचा, बिजली और नल से जल जैसी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाकर एक परिवर्तनकारी युग की शुरूआत की है। शाह ने जोर देकर कहा कि यूपी अब दंगों का गढ़ नहीं रहा, बल्कि दंगामुक्त हो चुका है, और गुंडों का फरमान अब नहीं चलता। उन्होंने नवनियुक्त कार्मिकों से इस परंपरा को और मजबूत करने का आह्वान किया।

# वर्दीधारी ट्रेनिंग में जितना पसीना बहाएंगे, जीवन में उतना ही कम खून बहेगा: सीएम योगी

## डिफेंस एक्सपो ग्राउंड में आयोजित हुआ 60,244 पुलिसकर्मियों का भव्य नियुक्ति पत्र वितरण समारोह

**यू.पी. ऑब्ज़र्वर**

**लखनऊ।** वर्दीधारी ट्रेनिंग में जितना पसीना बहाएंगे, जीवन में उतना ही कम खून बहेगा। महाकुंभ में पुलिस की भूमिका एक मिसाल थी। यहां आने वाले हर इंसान ने पुलिस के व्यवहार की प्रशंसा की। अगर हम वहां कर सकते हैं, तो हर जगह कर सकते हैं। पुलिस बल केवल कानून-व्यवस्था का नहीं, बल्कि सामाजिक विश्वास का प्रतीक बन रहा है। यूपी पुलिस में 60,244 पुलिसकर्मियों की भर्ती एवं नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम ऐसे समय में हो रहा है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देश सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के 11 वर्ष के कार्यकाल ने नए भारत के रूप में प्रत्येक भारतीय के जीवन में परिवर्तन लाने का काम किया है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को डिफेंस एक्सपो ग्राउंड में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह द्वारा 60,244 नवनियुक्त पुलिस कार्मिकों के नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में कही।

### पीएम मोदी के स्मार्ट पुलिसिंग के सूत्र को प्रदेश ने जमीनी हकीकत बना दिया

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पिछले 8 वर्षों में प्रदेश के युवाओं को साढ़े आठ लाख से अधिक सरकारी नौकरियां दी गईं है। वहीं अकेले यूपी पुलिस में करीब सवा दो लाख भर्तियां की गई हैं। यह केवल संख्या नहीं, बल्कि प्रदेश को दंगा मुक्त, भय मुक्त और निवेश समर्थ प्रदेश बनाने की दिशा में हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इसी के साथ डबल इंजन की सरकार ने परीक्षा की शुचिता और पारदर्शिता क्या होती है, इसका उदाहरण पेश किया है। उन्होंने कहा कि इस भर्ती में गरीब से गरीब परिवार का बेटा भी शामिल हुआ है। अब वह भी सिपाही बनकर प्रदेश की जनता की सेवा में योगदान दे पाएगा। सीएम योगी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'स्मार्ट पुलिसिंग' के सूत्र स्ट्रिक्ट एंड सेंसटिव, मॉर्डन एंड मोबाइल, अलर्ट एवं अकाउंटिबल, रिलायबल एंड रिस्पॉन्सिबल और टैक्नो सैवी एंड ट्रेंड का हवाला देते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश ने इन सिद्धांतों को जमीनी हकीकत बना दिया है।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि वर्ष 2017 में जब हमने भर्ती प्रक्रिया शुरू की थी, तब केंद्री गृह मंत्री ने पैरामिलिट्री और मिलिट्री ट्रेनिंग संसाधन उपलब्ध कराने में बड़ी भूमिका निभाई थी। अब हमने राज्य में ही 60,000 से अधिक पुलिस ट्रेनिंग की क्षमता विकसित कर ली है।

प्रदेश में 8 नई फॉरेंसिक लैब हो रही संचालित, सभी जिलों में तैनात हैं दो-दो मोबाइल फॉरेंसिक वैन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में फॉरेंसिक क्षमता बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया है। वर्तमान में प्रदेश में 8 नए फॉरेंसिक लैब चालू हो चुके हैं जबकि 6 और निमार्णाधीन हैं। सभी 75 जिलों में दो-दो मोबाइल फॉरेंसिक वैन तैनात की जा चुकी हैं। साथ ही 75 जिलों में साइबर थाने और 1,994 पुलिस थानों में साइबर हेल्प डेस्क की स्थापना की गई है। यह सभी व्यवस्था जुलाई 2024 से लागू होने वाले तीन नए आपराधिक कानूनों (भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023) के अनुरूप हैं। अंत में सीएम ने नव-नियुक्त जवानों से मित्रवत, संवेदनशील और जनता की समस्याओं को हल करने वाले पुलिसकर्मी बनने का आह्वान किया। उन्होंने सभी नव-नियुक्त पुलिसकर्मियों और उनके माता-पिता को बधाई देते हुए विश्वास जताया कि वे प्रदेश की सेवा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह, डिप्टी सीएम बृजेश पाठक, केशव प्रसाद मौर्य, मंत्री सुरेश खन्ना, स्वतंत्र देव, सूर्य प्रताप शाही, बेबी रानी मौर्य, आशीष पटेल, ओम राजभर, मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह, डीजीपी राजीव कृष्ण, प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद आदि मौजूद रहे।

### पहले पैसे और सिफारिश के बिना नौकरी मिलना असंभव था, अब यह बीते जमाने की बात हो चुकी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 60,244 नव-नियुक्त पुलिसकर्मियों का नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम देश के सबसे बड़े सिविल पुलिस बल में अब तक का सबसे बड़ा नियुक्ति कार्यक्रम है। उन्होंने कहा कि यह महज एक प्रशासनिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के 'स्मार्ट पुलिसिंग' विजन को साकार करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। वर्ष 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में पुलिस भर्ती में भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार हावी था। पैसे और सिफारिश के बिना नौकरी मिलना असंभव था, लेकिन अब यह सब बीते जमाने की बात हो चुकी है। हमने संविधान प्रदत्त आरक्षण का पालन करते हुए पूरी प्रक्रिया को मेरिट और पारदर्शिता के आधार पर संपन्न किया। सीएम ने कहा कि भर्ती में किसी भी जाति, धर्म, वर्ग या क्षेत्र के साथ कोई भेदभाव नहीं किया गया। प्रदेश में भर्तियों में दलित, पिछड़े, जनजातीय, गरीब, बेटियों सबको समान अवसर मिला है। यह नया उत्तर प्रदेश है, जहां मेरिट के आधार पर हर युवा को न्याय मिल रहा है।

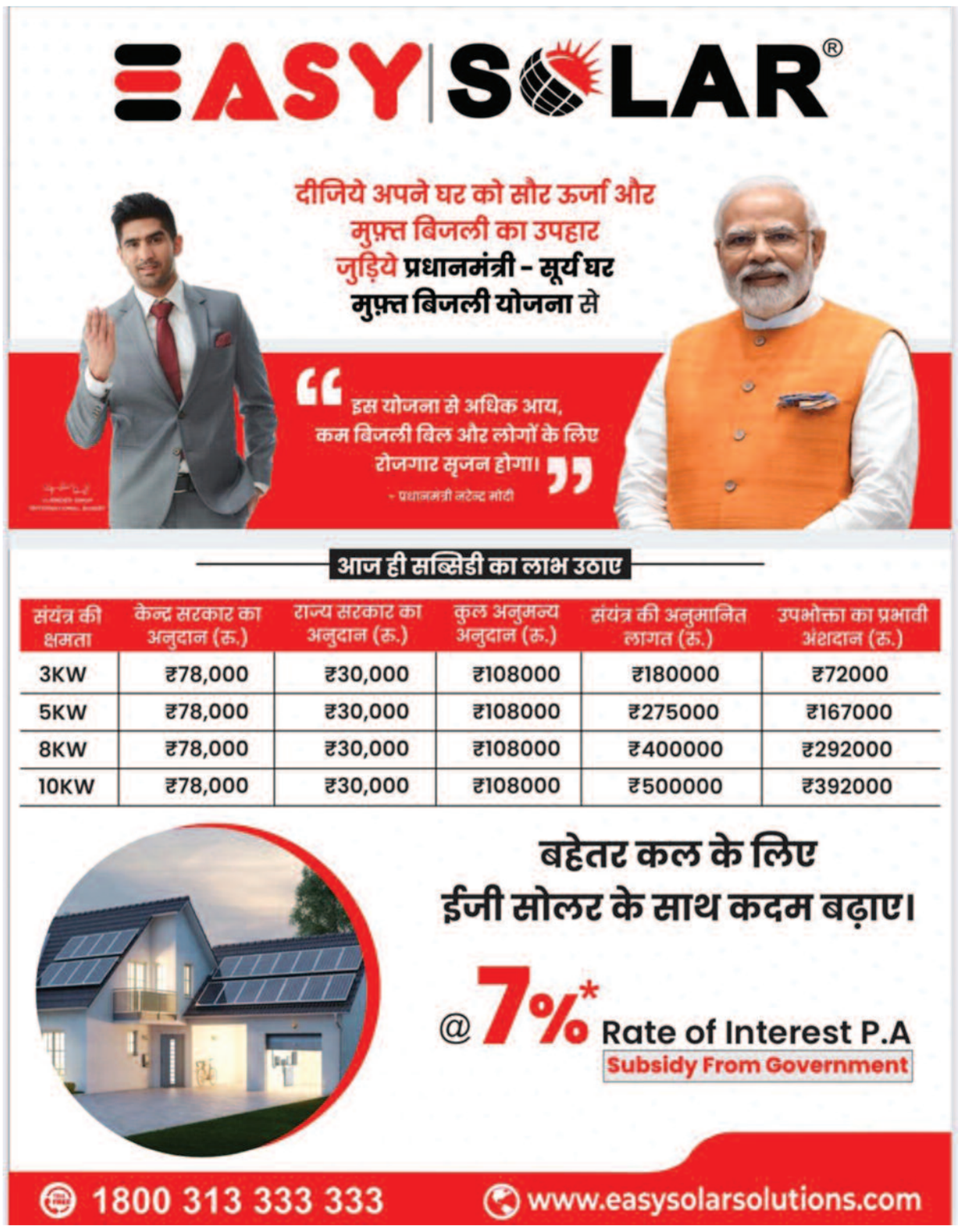

# योगी सरकार की पहल पर कैलाश मानसरोवर यात्रा के पहले जत्थे को मिली भक्ति से भरी विदाई

## मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश बना कैलाश मानसरोवर यात्रा का सशक्त केंद्र

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**गाजियाबाद।** पांच वर्षों के बाद एक बार फिर उत्तर प्रदेश से कैलाश मानसरोवर तीर्थ यात्रा का शुभारंभ हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश की सनातन परंपराओं को सहेजते हुए रविवार को इंदिरापुरम स्थित कैलाश मानसरोवर भवन से तीर्थयात्रियों के पहले जत्थे को भव्य आयोजन के बीच रवाना किया गया। इस जत्थे में दो लाइजनिंग अधिकारियों सहित कुल 39 यात्री शामिल हैं। शुरूआत में 46 यात्रियों का पंजीयन किया गया था, किंतु कुछ स्वास्थ्य कारणों से कुछ यात्री शामिल नहीं हो सके।

प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने सांसद अतुल गर्ग, कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा, आचार्य प्रमोद कृष्णम, प्रमुख सचिव धर्मार्थ कार्य एवं संस्कृति मुकेश मेश्राम, जिलाधिकारी दीपक मीणा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में बस को हरी झंडी दिखाकर तीर्थयात्रियों को विदा किया। कैलाश यात्रा की रवानगी के अवसर पर विशेष शैव आराधना का आयोजन हुआ, जिसमें डमरू, मृदंग, तुरही, ढोलक आदि पारंपरिक वाद्य यंत्रों की गूंज ने शिवमय वातावरण बना दिया। उपस्थित यात्रियों और जनप्रतिनिधियों ने उत्साह के साथ ₹हर हर महादेव₹ का जयघोष किया।

मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सनातन संस्कृति को पुनर्स्थापित करने की दिशा में ऐतिहासिक प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने इसे गौरव का क्षण बताते हुए कहा कि पांच साल बाद प्रदेश से कैलाश यात्रियों को भेजा जा रहा है। यह योगी सरकार की धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहन देने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। सांसद अतुल गर्ग ने यात्रियों को मंगलमय यात्रा की शुभकामनाएं दीं, जबकि कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा ने गर्व व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी विधानसभा में स्थित कैलाश भवन से यात्रा की शुरूआत होना गौरव की बात है। आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा कि मोदी-योगी युग में सनातनियों में नवचेतना का संचार हुआ है। इस अवसर पर प्रमुख सचिव मुकेश मेश्राम, निदेशक धर्मार्थ कार्य संजय सिंह, उत्तर प्रदेश पर्यटन निगम की एमडी सुश्री सान्या छाबड़ा, श्री काशी धाम मंदिर न्यास के सीईओ विश्व भूषण मिश्र सहित अनेक अधिकारी उपस्थित रहे।

### श्री काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास की ओर से सभी कैलाश मानसरोवर तीर्थ यात्रियों को विशेष उपहार देने की घोषणा

कैलाश तीर्थ यात्रियों के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के धर्मार्थ कार्य विभाग एवं श्री काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास द्वारा एक विशेष योजना की घोषणा की गई है। मंदिर न्यास के सीईओ एवं पर्यटन विभाग के संयुक्त निदेशक विश्व भूषण मिश्र ने बताया कि सभी यात्रियों को लौटने पर एक विशेष रुद्राक्ष माला और सुगम दर्शन के लिए क्यूआर कोड युक्त कार्ड भेंट किया जाएगा। यह कार्ड एक वर्ष तक वैध रहेगा और इसके जरिए श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन हेतु तीर्थयात्रियों व उनके चार परिजनों को प्राथमिकता मिलेगी। हालांकि, विशेष पर्वों जैसे महाशिवरात्रि, सावन सोमवार, रंगभरी एकादशी आदि पर यह सुविधा मान्य नहीं होगी। यह योजना मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा सनातन उत्थान और श्रद्धालु सुविधा के उद्देश्य से प्रेरित है, जिससे अन्य राज्यों से आने वाले तीर्थ यात्रियों को भी लाभ मिलेगा। इस घोषणा से तीर्थयात्रियों में जबरदस्त उत्साह देखा गया और सभी ने ₹हर हर महादेव₹ के उद्घोष से आभार प्रकट किया। ज्ञातव्य है कि माननीय मुख्यमंत्री योगी जी द्वारा उत्तर प्रदेश निवासी कैलाश मानसरोवर तीर्थ यात्रियों को तीर्थ यात्रा में रुपए 1 लाख की सहयोग राशि प्रदान की जा रही है।

## विधायक संजीव शर्मा ने बिजली विभाग के टेक्निकल व कॉमर्शियल डायरेक्टर को

# अकबरपुर बहरामपुर में बिजली संकट दूर करने के दिए निर्देश

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**गाजियाबाद।** शहर विधायक संजीव शर्मा भीषण गर्मी में शहरवासियों को बिजली को लेकर कोई दिक्कत ना हो, इसके लिए दिन-रात प्रयासरत हैं। इसके लिए वे अधिकारियों के साथ बराबर बैठक भी कर रहे हैं और बिजलीघरों का निरीक्षण भी कर रहे हैं। अकबरपुर बहरामपुर में पिछले कुछ दिन से बिजली का संकट होने से बिजली की कटौती हो रही है। लोगों की परेशानी को देखते हुए उन्होंने शुक्रवार को अकबर बहरामपुर बिजलीघर का निरीक्षण कर अधिकारियों को बिजली सप्लाई सुचारू करने के निर्देश भी दिए थे। विधायक संजीव शर्मा के मीडिया सलाहकार अजय चोपड़ा ने बताया कि विधायक संजीव शर्मा ने शनिवार को कविनगर स्थित अधिशासी अभियंता के कार्यालय में उन्होंने उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन लखनऊ के टेक्निकन डायरेक्टर एन के मिश्रा व डायरेक्टर कॉमर्शियल संजय जैन के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि अकबर बहरामपुर मे पिछले कुछ दिनों से बिजली का घोर संकट चल रहा है कटौती के कारण जनता का बुरा हाल हैं गर्मी की वजह से तमाम बीमारिया हो रही हैं। अतः लोगों को बिजली सप्लाई सुचारु रूप से मिले, इसके लिए हर सम्भव प्रयास किया जाए साथ ही 10 एम वी ए का नया ट्रांसफार्मर लगाकर बिजली की समस्या से निजात दिलाने के लिए कहा कि दोनों अधिकारियों ने विधायक संजीव शर्मा को जल्द ही बिजली का संकट दूर करने और इसके लिए नया ट्रांसफार्मर लगवाने का आश्वासन दिया।

# भगवान के चरणों में यही विनती है कि अहमदाबाद विमान हादसा फिर कभी ना हो: श्रीमहंत नारायण गिरि महाराज

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**गाजियाबाद।** सिद्धपीठ श्री दूधेश्वर नाथ महादेव मठ मंदिर गाजियाबाद के पीठाधीश्वर, श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा के अंतर्राष्ट्रीय प्रवक्ता व दिल्ली संत महामंडल के अध्यक्ष श्रीमहंत नारायण गिरि महाराज ने अहमदाबाद में हुए विमान हादसे में दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की। दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए उन्होंने श्री दूधेश्वर नाथ महादेव मठ मंदिर में गीता का पाठ भी कराया। महाराजश्री ने कहा कि अहमदाबाद का विमान हादसा बहुत ही दुखद, दर्दनाक व कभी ना भूलने वाला हादसा है। अपनी मंजिल तक पहुंचने और अपनों से मिलने के लिए 242 लोगों ने अहमदाबाद एयरपोर्ट से हंसते-मुस्कराहते हुए उडान भरी, मगर किसे मालूम था कि एक पल बाद ही उनकी यह उडान जिंदगी की अंतिम उडान साबित होने वाली है। पल भर में जहां हंसी-खुशी के ठहाके गूंज रहे थे, वहां मौत का सन्नाटा छा गया। एयरपोर्ट से उडान भरते ही विमान हादसे का शिकार हो गया और एक हॉस्टल पर जा गिरा। हादसे में विमान में सवार 242 लोगों में से महज एक ही बच पाया। वहीं एक युवती जाम में फंस जाने के कारण विमान में सवार नहीं हो पाई और उसकी जान भी बच गई। हॉस्टल के मेडिकल स्टूडेंटस की भी हादसे में जान चली गई। इस हादसे में जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके दुख को समझ पाना, सहन कर पाना संभव नहीं है। उन्हें जो क्षति हुई है, उसकी भरपाई तो कोई भी नहीं कर सकता है। भगवान से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को अपने चरणों में स्थान दें और परिजनों को यह दुख सहन करने की शक्ति मिले। साथ ही भगवान के चरणों में यह विनती भी है कि वे सभी पर अपनी कृपा बनाए रखें ताकि भविष्य में ऐसा कोई हादसा ना हो और कोई भी असमय अपनी जान ना गवाएं।

- महाराजश्री ने दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए गीता का पाठ कराया

## एचआरआईटी यूर्निवर्सिटी गाजियाबाद में

# शिक्षाविद् सम्मान समारोह एवं संवाद का हुआ आयोजन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**गाजियाबाद।** ईएफओएस एवं लाइफ लांग लर्निंग पाथवे के संयुक्त तत्वावधान में एचआरआईटी यूर्निवर्सिटी गाजियाबाद में शिक्षाविद् सम्मान समारोह एवं संवाद का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर देशभर से आए 80 से अधिक करियर काउंसलर्स व शिक्षाविदों को शिक्षा एवं छात्र मार्गदर्शन के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए शिक्षाविद् सम्मान से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य आकर्षण के रूप में एआई के युग में फ्यूचर स्किल्स और रोजगार की संभावनाएं विषय पर एक महत्वपूर्ण पैनल चर्चा आयोजित की गई। जिसका संचालन ईएफओएस की चेयरपर्सन डॉ. आकांक्षा जैन ने किया। पैनल में प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. देवेंद्र कुमार शर्मा (कुलपति, एचआरआईटी), रिजवान अहसन (एआई सलाहकार), डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद शर्मा (लाइफलॉन्ग लर्निंग पाथवेज) और डॉ. आंखित शर्मा (इम्पलायमेंट एक्सप्रेस) उपस्थित रहे। एचआरआईटी के चांसलर डॉ. अनिल अग्रवाल ने एआई आधारित स्किलिंग को समय की माँग बताया और कहा कि युवाओं को केवल डिग्री नहीं, बल्कि व्यावहारिक कौशल और इंडस्ट्री एक्सपोजर की आवश्यकता है। प्रो-चांसलर डॉ. अंजुल अग्रवाल ने बताया कि एआई अब अपने सभी पाठ्यक्रमों में अक और टेक्नोलॉजी प्रशिक्षण को एकीकृत कर रहा है। कुलपति डॉ. डी. के. शर्मा ने छात्रों से आग्रह किया कि वे एआई युग की चुनौतियों के लिए स्वयं को तैयार करें।

कुलसचिव डॉ. विनोद यादव, प्रशासनिक टीम से योगेश सक्सेना व शबनम जैदी तथा ईएफओएस टीम से अनुप कुमार, प्रफुल्ल कुमार एवं अमित चौधरी की उपस्थिति व सहयोग सराहनीय रहा। ईएफओएस के सह-संस्थापक सचिन जैन ने सभी शिक्षकों, पैनल वक्ताओं और अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा, यह केवल एक सम्मान समारोह नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण की दिशा में एक साझा संवाद है।

## मंत्री नरेंद्र कश्यप ने परिवार सहित सीएम से की भेंट

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**गाजियाबाद/लखनऊ।** प्रदेश के पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नरेंद्र कश्यप ने लखनऊ स्थित मुख्यमंत्री आवास पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से परिवार सहित सौजन्य भेंट की। भेंट के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आत्मीयता पूर्वक मंत्री नरेंद्र कश्यप के परिवार के साथ सौहार्द्रपूर्ण संवाद किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने मंत्री कश्यप की जुड़वा नातिनों को गोद में उठाकर स्नेहपूर्वक खिलाया एवं उन्हें उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया। मंत्री नरेंद्र कश्यप ने कहा कि मैं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मेरे परिवार को अपने स्नेह और आशीर्वाद से अभिसिंचित किया। मुख्यमंत्री का यह आशीर्वाद हमारे लिए गौरव, ऊर्जा और प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

## राजनगर मंडल में विकसित भारत-2047 संकल्प सभा आयोजित

# सुशासन के 11 वर्ष पूर्ण होने पर मंडलवार संकल्प कार्यक्रमों की श्रृंखला में विशेष आयोजन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**गाजियाबाद।** भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 11 वर्षों की ऐतिहासिक उपलब्धियों एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत 2047₹ के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से गाजियाबाद महानगर के सभी मंडलों में संकल्प सभाओं का आयोजन किया गया। इसी क्रम में राजनगर मंडल में एक भव्य एवं प्रेरणादायक संकल्प सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजनगर मंडल अध्यक्ष नीरज त्यागी ने की। कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल एवं मुरादनगर विधायक अजीत पाल त्यागी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल ने अपने ओजस्वी एवं प्रेरणादायक संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश ने पिछले 11 वर्षों में सुशासन, सेवा और सुशक्ति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

अब हमारा अगला लक्ष्य है विकसित भारत 2047'। यह तभी संभव है जब हम सभी नागरिक अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करें और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाएं। सभा को संबोधित करते हुए विधायक अजीत पाल त्यागी ने कहा कि 2047 में जब देश स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, तब भारत को विश्व के विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा देखना ही प्रधानमंत्री का सपना है। इसके लिए हमें भ्रष्टाचार, भेदभाव, अव्यवस्था और नकारात्मक मानसिकता को छोड़ते हुए एकजुट होकर कार्य करना होगा। इस अवसर पर पूर्व महानगर अध्यक्ष अमर दत्त शर्मा ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि यह संकल्प सभा केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि आने वाले भविष्य की ठोस नींव है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने वैश्विक मंच पर एक नया आत्मविश्वास अर्जित किया है और 'विकसित भारत 2047' का सपना तभी साकार होगा, जब प्रत्येक कार्यकर्ता इस मिशन को अपना व्यक्तिगत उत्तरदायित्व माने। सभी कार्यकताओं एवं नागरिकों के समक्ष 'विकसित भारत 2047' संकल्प पत्र को विधायक अजीत पाल त्यागी ने पढ़ा अन्य सभी ने उसका सामूहिक वाचन किया एवं हस्ताक्षर करके अपनी सहभागिता और प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस अवसर पर पूर्व महानगर उपाध्यक्ष डी.एन. सिंह, महानगर मीडिया प्रभारी प्रदीप चौधरी, युवा नेता रॉबिन तोमर सहित अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संयोजन एवं संचालन राजनगर मंडल अध्यक्ष नीरज त्यागी एवं विनीत शर्मा के नेतृत्व में किया गया।

# फाइव स्टार होटल में भी घर से लायी बाजरे की रोटी खाते थे ये सांसद, कभी नहीं लिया वेतन

प्रस्तुति: विवेक त्यागी

गुरुकुल घरोंदा के आचार्य और जनसंघ के टिकट पर सांसद बनने वाले, जिन्होंने कभी सरकारी आवास नहीं लिया । वे दिल्ली के बाजार सीताराम, दिल्ली-6 के आर्य समाज मंदिर में रहते थे और संसद भवन तक पैदल जाया करते थे वहां की कार्रवाई में भाग लेने के लिए। वे ऐसे पहले सांसद थे, जो हर सवाल पूछने से पहले संसद में एक वेद मंत्र बोला करते थे । उनके द्वारा बोले गए सभी वेद मंत्र संसद की कार्रवाई के रिकार्ड में देखे जा सकते हैं। उन्होंने एक बार संसद का घेराव भी किया था, गोहत्या पर बंदी के लिए।

एक बार इंदिरा गांधी ने किसी मीटिंग में उन स्वामी जी को पांच सितारा होटल में बुलाया। वहां जब लंच चलने लगा तो सभी लोग बुफे काउंटर की ओर चल दिये। लेकिन स्वामी जी वहां पर नही गए। उन्होंने अपनी जेब से लपेटी हुई बाजरे की सूखी दो रोटी निकाली और बुफे काउंटर से दूर जमीन पर बैठकर खाने लगे।

इंदिरा जी ने उनसे कहा कि 'आप क्या करते हैं? क्या यहां खाना नहीं है? सभी पांच सितारा व्यवस्थाएं आप सांसदों के लिए ही तो की गई हैं।'

स्वामी रामेश्वरानंद जी महाराज

मैं संन्यासी हूं सुबह भिक्षा में किसी ने यही रोटियां दी थी इसलिए साथ ले आया, मैं सरकारी धन से रोटी भला कैसे खा सकता हूं।

इंदिरा जी का धन्यवाद देते हुए होटल में उन्होंने इंदिरा से एक गिलास पानी और आम के अचार की एक फांक ले ली थी। जिसका भुगतान भी उन्होंने इंदिरा जी के मना करने के बावजूद किया था ! जानते हैं यह महान सांसद और संन्यासी कौन थे? ये थे सन्यासी स्वामी रामेश्वरानंद जी, परम गौ भक्त, अद्वितीय व्यक्तित्व के स्वामी जी हरियाणा के करनाल से सांसद थे।

सांसद रहते हुए भी कभी कैंटीन का खाना नहीं खाया। जेब में दो रोटी लेकर संसद जाते थे। अपना सारा वेतन रक्षा कोष में देते थे। यह कहानी है स्वामी रामेश्वरानंद की। जनसंघ से जुड़े स्वामी 1962 में करनाल लोकसभा से सांसद बने, पर सरकारी सुविधाएं नहीं लीं। आर्य समाज मंदिर के एक छोटे से कमरे में रहते थे। अपनी दो रोटी कभी खुद बना लेते थे या भिक्षा में ले लेते थे।

ऐसे अनेकों साधक हुए इस देव भूमि भारत पर जिनके विषय में हमें पढ़ाया ही नहीं गया और ना बताया गया। अपनी राज सत्ता लालच के कारण कांग्रेस ने कभी ऐसे लोगों को आगे नहीं बढ़ने दिया। यहां तक कि लालबहादुर शास्त्री जी को भी सदैव पीछे रखा।

कभी मौका लगे तो आप भी अवश्य जानिए ऐसे व्यक्तित्वों के विषय में, भारत को तपस्वियों का देश ऐसे ही नहीं कहा जाता है , भला हो भारतीय जनता पार्टी का कि अब ऐसे तमाम नेता देश सेवा के लिए आगे आए हैं ।

कांग्रेस शासन में ऐसे महान व्यक्तियों का कहीं भी और कभी भी जिक्र नहीं किया जाता था और ना ही उन्हें आगे बढ़ने दिया जाता था।

## श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय एवं 'विम्स' के संयुक्त तत्वाधान में

# 'वृहद रक्तदान शिविर एवं रक्तदान संगोष्ठी' का आयोजन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**मेरठ।** एस0वी0यू0, विम्स मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल एवं वी0जी0आई0 मेरठ के संयुक्त तत्वाधान में संस्थान प्रबंधन एवं छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, पुलिसकर्मियों एवं विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओ से आये स्वैच्छिक रक्त-दाताओं ने 126 यूनिट रक्तदान कर लोगों के जीवन बचाने की शपथ ली।

गौदान (गाय दान), मतदान, कन्यादान, अन्नदान ये सभी ''श्रेष्ठ'' दान है, परन्तु ''रक्तदान'' सर्वश्रेष्ठ दान है, क्योंकि इसके द्वारा आप किसी को नया जीवन देते है- श्री सुधीर गिरि, संस्थापक अध्यक्ष वेंक्टेश्वरा समूह।

वेंक्टेश्वरा देश की विभिन्न ''स्वैच्छिक स्वास्थय संस्थाओ'' के साथ मिलकर पूरे देश में ''रक्तदान जागरूकता शिविर'' आयोजित करेगा वेंक्टेश्वरा समूह- डॉ0 राजीव त्यागी, प्रतिकुलाधिपति श्री वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय एवं आधिकारिक प्रतिनिधि समूह चेयरमैन।



सभी स्वैच्छिक रक्तदाताओं ने हाथों में रक्तदान जागरूकता की तख्तियां लेकर संस्थान परिसर में लोगो को रक्तदान के लिए प्रेरित किया।

आज राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय, विम्स मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल एवं वी0जी0आई0 मेरठ, के संयुक्त तत्वाधान में संस्थान में एक ''वृहद रक्तदान शिविर'' का शानदार आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान प्रबंधन, छात्र-छात्राओं, शिक्षकों एवं स्वैच्छिक रक्तदाताओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए एक सौ छब्बीस यूनिट रक्तदान किया। इस अवसर पर स्वैच्छिक रक्तदाताओं ने संस्थान परिसर में हाथो में तख्तियां लेकर लोगो को रक्तदान के लिए प्रेरित भी किया एवं रक्तदान कर लोगो के जीवन को बचाने की शपथ दिलायी। साथ ही एक सी0एम0ई0 आयोजित कर उपस्थित चिकित्सको, पैरामेडिकल स्टॉफ, एवं नर्सिंग छात्र-छात्राओ ने रक्तदान के महत्व को समझाया गया।



वेंक्टेश्वरा संस्थान के ब्लड बैंक (ब्लड सेन्टर) में आयोजित ''वृहद रक्तदान शिविर'' का शुभारम्भ संस्थापक अध्यक्ष श्री सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डॉ0 राजीव त्यागी, डीन मेडिकल डॉ0 संजीव भट्, पैथोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ0 एम0एस0 प्रभु, डॉ0 गरिमा भटनागर, डॉ0 नौशाद अंसारी आदि ने फीता काटकर किया।



इसके बाद शुरू हुए ''मेगा रक्तदान शिविर'' में सबसे पहले प्रतिकुलाधिपति डॉ0 राजीव त्यागी ने रक्तदान किया। इसके बाद नर्सिंग, फामेर्सी, एग्रीकल्चर, प्रबंधन के छात्र-छात्राओं, शिक्षको एवं स्वैच्छिक रक्तदाताओ ने बढ़-चढ़कर रक्तदान करते हए 126 यूनिट रक्तदान कर लोगो का जीवन बचाने की शपथ ली। अपने सम्बोधन में संस्थापक अध्यक्ष श्री सुधीर गिरि ने कहा कि मतदान, गौदान (गाय दान), कन्यादान को हमारे देश में ''श्रेष्ठ दान'' माना गया है पर ''रक्तदान'' को ''सर्वश्रेष्ठ'' दान की श्रेणी में रखा गया है, क्योंकि इसके द्वारा आप जरुरतमंद को नया जीवन देते है। उन्होंने सभी से स्वयं रक्तदान करने के साथ-साथ दूसरो को भीर क्तदान के लिए प्रेरित करने की अपील की।

इस अवसर पर कुलपति डॉ0 कृष्णकान्त दवे, कुलसचिव प्रो0 पीयूष कुमार पाण्डेय, नर्सिंग डीन डॉ0 एम0एस0 प्रभु, डॉ0 सची अहलावत, डॉ0 गरिमा भटनागर, डॉ0 नीविशा, डॉ0 कवंर, डॉ0 मनीष, डॉ0 स्नेहा गौतम, डॉ0 नौशाद, हॉस्पिटल मार्केटिंग निदेशक एम0ए0 चौधरी, फरहीन, नर्सिंग हेड ज्योति वाजपेयी, अनीता, मेरठ परिसर से डॉ0 प्रताप एवं मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

# गन्ना उत्पादन बढ़ाने के लिए चीनी मिलों में टिश्यू कल्चर मृदा परीक्षण और जैव उर्वरक लैब की कि जाएगी स्थापना

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**लखनऊ।** फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस कड़ी में उत्तर प्रदेश के गन्ना एवं चीनी आयुक्त प्रमोद कुमार उपाध्याय ने बताया कि गन्ना किसानों को स्वस्थ एवं उपजाऊ मिट्टी में गन्ने की खेती कराना सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी प्राथमिकता के क्रम में गन्ने के उत्पादन एवं गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए टिश्यू कल्चर, मृदा परीक्षण और जैव उर्वरक तकनीकी विधाओं को बढ़ावा देने के लिए चीनी मिल समूहों तथा क्षेत्रीय अधिकारी के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

इस बैठक में सभी चीनी मिलों को टिश्यू कल्चर, मृदा परीक्षण तथा जैव उर्वरक/ बायो पेस्टीसाइड तकनीकों को लागू करने के निर्देश दिए गए हैं जिससे गन्ना किसानों को




स्वस्थ, रोग रहित बीज प्राप्त हो सके। इसके साथ ही टिश्यू कल्चर का उपयोग कर नई किस्मों के गन्ना बीज का त्वरित उत्पादन किया जा सकता है।



गन्ना एवं चीनी विभाग के आयुक्त ने बताया कि प्रदेश के चीनी मिल समूह मिल क्षेत्र पर मृदा परीक्षण लैब की स्थापना करेगी और प्रत्येक किसान को सॉइल हेल्थ कार्ड वितरण करेंगी तथा मिल क्षेत्र का फर्टिलिटी मैप भी तैयार करेंगी। जिससे किसानों को अपनी मिट्टी की उर्वरता का पता चलेगा, तथा किसान खेतों में उचित उर्वरकों का प्रयोग कर गन्ने की पैदावार में अत्यधिक वृद्धि कर सकेंगे। इसके साथ ही उर्वरकों का दुरुपयोग रोकने से लागत में कमी लाई जा सकेगी।

आयुक्त ने परिक्षेत्रीय अधिकारियों, कार्मिकों, चीनी मिल समूहों को निर्देशित किया कि पर्यावरण सुरक्षा एवं टिकाऊ खेती के लिए रसायनों के स्थान पर जैव उर्वरकों और बायो पेस्टीसाइड के प्रयोग के लिए किसानों को प्रेरित करें। इसके लिए किसानों के हित में प्रदेश की प्रत्येक चीनी मिल क्षेत्र में जैव उर्वरक और बायो-पेस्टीसाइड लैब की स्थापना करने के निर्देश दिए हैं।

# गाजियाबाद में हीटवेव का कहर

**1- हाइड्रेटेड रहें:** प्यास न लगने पर भी दिन भर खूब पानी पिएं।

नींबू पानी, नारियल पानी, ओआरएस और घर के बने ठंडे पेय पदार्थ जैसे तरल पदार्थों का सेवन करें। कैफीन और शराब से बचें क्योंकि वे शरीर को निर्जलित कर सकते हैं।

**2- सही कपड़े पहनें:** हल्के, ढीले और सूती कपड़े चुनें। बाहर निकलते समय अपने सिर को टोपी या कपड़े से ढकें और अपनी आँखों को धूप के चश्मे से बचाएं। अपनी त्वचा को यूवी किरणों से बचाने के लिए रढत्र्न 30+ सनस्क्रीन का उपयोग करना न भूलें।

**3- अपनी दिनचर्या बदलें:** सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे के बीच सीधी धूप में निकलने से बचें। इस दौरान भारी व्यायाम या बाहरी गतिविधियों से दूर रहें। अपने घर को ठंडा रखें, पंखे, कूलर या क्रॉस-वेंटिलेशन का उपयोग करें। अपने शरीर के तापमान को नियंत्रित करने के लिए नहाएं या शरीर पर ठंडा पानी डालें।

**4- हीटवेव के लक्षणों को पहचानें:**

**हीट एग्जॉशन:** अत्यधिक पसीना आना, कमजोरी, चक्कर आना और उल्टी जैसे लक्षणों पर ध्यान दें।

**हीट स्ट्रोक:** पसीना न आना, तेज बुखार, भ्रम या बेहोशी जैसे लक्षण एक आपातकालीन स्थिति का संकेत देते हैं। ऐसे किसी भी लक्षण का अनुभव होने पर तुरंत नजदीकी अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र से संपर्क करें।

# अंतरराष्ट्रीय योग दिवस सप्ताह पर बहादुरगढ़ में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**बहादुरगढ़।** अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 17 जून से 21 जून तक बहादुरगढ़ के सार्वजनिक पार्कों में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम का संयोजन इंडियन नैचुरोपैथी प्रैक्टिसनर एसोसिएशन (इनपा), हरियाणा चैप्टर के समन्वयक डॉ. बालकिशन तंवर द्वारा किया जा रहा है। डॉ. बालकिशन तंवर, जो एक वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक हैं, ने जानकारी देते हुए बताया कि इस प्रदर्शनी का उद्देश्य आमजन को योग और प्राकृतिक चिकित्सा के लाभों से अवगत कराना है। उन्होंने कहा कि ₹स्वस्थ जीवन के लिए योग और नेचुरोपैथी की भूमिका आज पहले से कहीं अधिक



महत्वपूर्ण हो गई है।' प्रदर्शनी में योगासनों की जानकारी, प्राकृतिक उपचार विधियों, संतुलित आहार, और दिनचर्या से संबंधित चित्रात्मक प्रस्तुति दी जाएगी। स्थानीय नागरिकों, विद्यार्थियों और स्वास्थ्य प्रेमियों से इस सप्ताहभर चलने वाले आयोजन में भाग लेने का आह्वान किया गया है।



स्व. रमेश महिपाल
(25 अगस्त, 1939 – 31 मई, 2025)

मेरे प्रेरणास्रोत और आदर्श मार्गदर्शक पूज्य रमेश महिपाल जी का बैकुंठधाम प्रयाण हो गया है। उनकी प्रेरणाएं और मार्गदर्शन सदा हमारा पथ प्रदर्शन करते रहेंगे।

सादर श्रद्धांजलि

आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री
संपादक

# खेती में प्राकृतिक इनपुट का उपयोग करें, किसान मृदा एवं पर्यावरणीय समस्याओं का स्थायी समाधान है, प्राकृतिक खेती: गन्ना आयुक्त

## प्राकृतिक खेती से लागत कम, मृदा स्वास्थ्य बेहतर करें गन्ना किसान

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**लखनऊ।** आयुक्त गन्ना एवं चीनी उ.प्र. प्रमोद कुमार उपाध्याय की अध्यक्षता में प्रदेश में गन्ने के साथ प्राकृतिक खेती के विश्लेषण, विकास सम्भावनाएं और चुनौतियां विषय पर वर्चुअल संगोष्ठी को ऑनलाइन संबोधित करते हुए कहा कि किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने की ओर अग्रसर होना चाहिए क्योंकि बढ़ते रसायनों के प्रयोग के कारण हमारी फसलों के उत्पाद अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते और अधोमानक होने के कारण उन्हें वापस कर दिया जाता है। रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से उपभोक्ताओं का स्वास्थ्य, मिट्टी, जल एवं वातावरण प्रभावित होता है। यह समय की आवश्यकता है कि प्रदेश के किसान प्राकृतिक खेती अपनाने की तरफ अग्रसर हों क्योंकि प्राकृतिक खेती पूर्णरूपेण पर्यावरण हितेषी है. जो देसी गाय, देसी बीज एवं मृदा जीवांश एवं जल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उन्होंनें कहा कि वैज्ञानिक कृषि तकनीकों से हमने खाद्यान्न के क्षेत्र में तो आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है किन्तु इनके साथ कुछ चुनौतियों भी बढ़ी है जैसे कि मिट्टी का औसत जीवाश्म घट



रहा है, वायु व भू-जल प्रदूषित हो रहा है. सांस लेने वाली प्राण वायु लगातार जहरीली होती जा रही है. भू-जल का स्तर तेजी से घटता जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अन्धाधुन्ध प्रयोग से मानव, पशुओं अन्य जीवों के साथ फसलों का स्वास्थ्य लगातार प्रभावित हो रहा है। खेती पर किसानों की लागत दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इस सभी का स्थायी समाधान प्राकृतिक खेती है।

आयुक्त महोदय ने बताया कि प्रकृति का यह नियम है कि हम जो भी उत्पादन भूमि से ले रहे हैं उसके बदले में भूमि को पर्याप्त पोषण देना अत्यन्त आवश्यक है, जिसके लिए देशी गाय की गोबर और गौ-मूत्र से निर्मित खाद और जैव उर्वरकों का प्रयोग बढ़ाना होगा। रासायनिक कीटनाशक के प्रयोग से खेती में लागत बढ़ने के साथ ही मृदा और पर्यावरण के



स्वास्थ्य को भी क्षति हो रही है। इसलिए हमे गन्ने में कीट नियंत्रण प्राकृतिक / जैविक उपायों को बढ़ाना होगा

गन्ना आयुक्त ने प्राकृतिक खेती के खूबियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह ऐसी कृषि पद्धति है जिसमें बाजार से कोई बाहरी संसाधन खरीदने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राकृतिक खेती के निरन्तर अभ्यास से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। प्राकृतिक खेती किसानों के लागत को कम करती है। यह मिट्टी के जीवश्यम स्तर को हर साल बढ़ाती चली जाती है। इसलिए किसानों को प्राकृतिक खेती की तरफ अग्रसर होना चाहिए।

प्राकृतिक खेती से सम्बन्धित ऑनलाइन संगोष्ठी में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से प्राकृतिक खेती से जुड़े किसान श्री सेठपाल सिंह, ग्राम-नन्दीफिरोजपुर जिला-सहारनपुर ने प्राकृतिक खेती के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। श्री भारत भूषण त्यागी ग्राम बीटा एवं श्री संजीव कुमार, ग्राम-निसूरलखा जिला बुलन्दशहर ने प्राकृतिक खेती के तीन पहलुओं समझना, सीखना और करना पर विशेष बल देते हुए कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का दौहन कर प्रकृति को अनियंत्रित की जा रही है इस लिए प्राकृतिक खेती के लिए समझना, सीखना और करना आवश्यक है। जनपद बरेली के प्राकृतिक खेती करने वाले श्री अनिल कुमार किसान ने अपने अनुभव को साझा किया। कार्यक्रम में जिला शामली से आये किसान श्री अरूण मलिक एवं श्री ठाकुर धर्मपाल सिंह ने प्राकृतिक खेती जीवामृत, घनजीवामृत व बीजामृत के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ-साथ विभाग के समस्त परिक्षेत्रीय अधिकारियों ने भी कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

यू.पी.ऑब्ज़र्वर


## सम्पादकीय

# उड़ान सुरक्षा मानकों पर उठते सवाल!

अहमदाबाद हवाई अड्डे के पास हुई भीषण विमान दुर्घटना ने देश को झकझोर दिया है। उड़ान भरने के कुछ ही समय बाद हुई इस दुर्घटना से जांचकताओं और विमानन विशेषज्ञों के सामने कई सवाल उठ खड़े हुए हैं। भारत में पिछले दशकों में कई हवाई दुर्घटनाएं देखी गई हैं। हरेक हादसे के बाद विमानन क्षेत्र में सुरक्षा के नए मानकों को लेकर मंथन हुआ है और जरूरी बदलाव किए गए हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक छानबीन के तय मानक हैं और सुझावों को हर देश को मानना होता है। सवाल उठता है कि अहमदाबाद में क्या हुआ। हादसे के जो वीडियो सामने आए हैं, उनसे स्पष्ट है कि विमान उड़ते समय नीचे गिरा। अचानक विमान की बिजली ठप हो जाने से ऐसा होता है। इससे इंजन बंद हो जाते हैं, लेकिन इस बात की कम संभावना होती है कि किसी विमान के दोनों इंजन एक साथ बंद हो जाएं। विशेषज्ञों के मुताबिक, इस हादसे में एक बात खटकने वाली है। विमान के उड़ान भरते ही लैंडिंग गियर को ऊपर उठा दिया जाता है, लेकिन इसका लैंडिंग गियर नीचे था। संभव है कि पायलट को इंजन में खराबी का पता चला हो और उसने संभालने की कोशिश की हो। दरअसल, विमान का उड़ान भरना और उतरना उड़ान का सबसे खतरनाक चरण होता है। जब यह हादसा हुआ, तब विमान 625 फुट की ऊंचाई पर था, जिससे यह सवाल उठता है कि क्या चालक दल किसी एक ही समस्या से निपट रहा था या एक साथ कई समस्याओं से। हादसे का शिकार हुआ विमान बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर था जो चौड़े आकार वाला और दो इंजन से लैस होता है। जब जांच होगी तो पहला सवाल यही पूछा जाएगा कि यह विमान उड़ान भरने के लिए सही ढंग से तैयार था या नहीं। जेट विमानों में कई सहयोगी प्रणालियां होती हैं जिसमें केवल एक इंजन के साथ ऊपर चढ़ने की क्षमता भी शामिल होती है। अभी यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि एअर इंडिया के इस विमान ने कितनी उड़ानें पूरी की थीं। फ्लाइट रडार24 के आंकड़ों के मुताबिक, यह विमान एक दशक से भी ज्यादा पुराना था। बोइंग के ड्रीमलाइनर को लेकर अतीत में सुरक्षा संबंधी चिंताएं सामने आई थीं, लेकिन कभी दुर्घटना नहीं हुई थी। भारतीय वायु क्षेत्र में पिछला बड़ा हादसा 2020 में हुआ था, जब एअर इंडिया एक्सप्रेस की सहायक कंपनी का एक यात्री विमान केरल में बारिश से भीगे रनवे पर फिसल गया और दो टुकड़ों में टूट गया। कम से कम 17 लोगों की मौत हो गई थी। वर्ष 2010 में, एअर इंडिया एक्सप्रेस का एक विमान मैंगलोर में एक पहाड़ी रनवे से फिसल गया था। विमान में आग लग गई थी, जिसमें 150 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। यह वह दौर था, जब भारत के तेजी से बढ़ते विमानन क्षेत्र में सुरक्षा और व्यावसायिकता को लेकर कई स्तर पर लोग चिंतित थे। अब स्थिति सुधरने लगी थी और विमानन क्षेत्र ने करवट लेनी शुरू की थी। सरकार ने उड़ान समेत कई नई योजनाएं शुरू कीं। ऐसे में बड़े हादसे से समूची कवायद ठिठक जाएगी। उठे सवालों पर मंथन कर आगे बढ़ना होगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि झकझोर देने वाले इस हादसे से विमानन कंपनियों समेत तमाम पक्ष सबक लेंगे और सुरक्षा की सौ फीसद गारंटी दी जा सकेगी।

# श्रृंगी ऋषि के राम

## ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी को इस जन्म में अक्षरबोध न होने पर भी, एक विशेष समाधि अवस्था में, शवासन की मुद्रा में लेट जाने पर पूर्व जन्मों की स्मृति के आधार पर, भगवान राम के दिव्य जीवन को प्रवचनों में साक्षात वर्णित किया है

ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी का जन्म 27 सितम्बर, सन 1942 को गाजियाबाद जिले के ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में हुआ,वे जन्म से ही जब भी सीधे, श्वासन की मुद्रा में लेट जाते या लिटा दिये जाते,तो उनकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित 45 मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन होता। पर इस जन्म में गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अक्षर बोध भी न कर सके,ऐसे ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा,बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ, कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, श्रृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और इसी आत्मा के द्वारा राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि याग कराया गया,और अब जब वे समाधि अवस्था में पहुँच जाते है तो पूर्व जन्मों की स्मृति के आधार पर प्रवचन करते ,यहाँ प्रस्तुत हैं उनके उनके द्वारा साक्षात देखा गाया, भगवान् राम का दिव्य जीवन )

भाग 23,
गतांक से आगे .....

### ज्ञान

विचार करता है कि अग्नि के पश्चात जल विद्यमान रहता है। जल के ऊपर जब अन्वेषण करता है तो पृथ्वी के कण उसे दृष्टिपात आने लगते हैं। जब वह दृष्टिपात करने लगता है पृथ्वी के कणों को तो उन कणों में इस ब्रह्माण्ड की रचना का विधान में निहित रहता है। तो जब ये इतनी वस्तुओं को दृष्टिपात कर लेता है, तो वह ज्ञान के सागर में चला जाता है। तो ज्ञान मानो विज्ञान ही कहलाता है।'' वो जब ज्ञान में चला जाता है।

तो माता अरुन्धती कहती हैं, उसे हम ज्ञान कहते हैं, ''उसे हम ज्ञान की प्रतिभा में परिणित करते हुए, हमारे यहाँ अध्ययन की परम्परा में सबसे प्रथम ज्ञान आता है। ज्ञान को जब हम अपने में धारण करते हैं,तो हमारे हृदय में एक प्रकाश की अनुभूति होने लगती है। हम अपने में यह स्वीकार करलें की ज्ञान तो बड़ा अनन्तमयी है। प्रत्येक वस्तु को दृष्टिपात करके उसके गर्भ में जाना ही ज्ञान है; परन्तु यह बड़ा आश्चर्य भरा विचित्रता मानी गई है।''

### कर्म

माता अरुन्धती ने कहा कि ''मैं सदैव अध्ययन करती रही हूँ और इसके ऊपर हम गमन करते हैं,सबसे प्रथम ज्ञान और ज्ञान के पश्चात् क्रिया-कलाप अथवा कर्म आता है। हम कर्म किसे कहते हैं। हम दृष्टिपात करते हैं, जिनको हमने ज्ञानयुक्त हो करके जान लिया है, उसको क्रिया में लाना चाहते हैं। जैसे हमने सूर्यलोक को दृष्टिपात किया है, अब सूर्य को हम क्रिया में लाना चाहते हैं, अपने में धारण करना चाहते हैं, सूर्य कहाँ-कहाँ क्या-क्या क्रिया-कलाप कर रहा है? परन्तु वह सूर्य कैसा है,कैसी उसकी नाना प्रकार की किरणें हमारे समीप आ करके हमें क्रियात्मक बना देती हैं? प्रातःकाल सूर्य उदय



ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी

हुआ है,उदय हो करके वह प्रकाश देता है और अपनी, क्रियाओं में रत्त होने लगता है। नाना प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त हो करके उसी में सायङ्काल तक रत्त रहता है। सूर्य का जो अनुपम प्रकाश है,वही तो हमें कर्मों में लाता है। उस सूर्य की किरणें चन्द्रमा को अमृत देती हैं, शीतलता देती हैं। वे ही सूर्य और चन्द्रमा दोनों की किरणें बन करके समुद्रों में प्रवेश करती हैं। समुद्रों में जब प्रवेश किया,तो वहाँ से जलों का उत्थान हो गया;वही सूर्य की किरणें द्यौलोक में पहुँचीं और द्यौ-मण्डल से प्रकाश ले करके मेंघों का उत्थान किया,जिससे नाना प्रकार की वृष्टि हुई और पृथ्वी पर नाना प्रकार के व्यंजनों का जन्म हो गया। परन्तु उसको हम क्रिया में लाना चाहते हैं। उन्हें हम क्रिया में कैसे लाएं? अनुसन्धान करते हैं, विचार करते हैं कि हमें ज्ञान तो हो गया है, परन्तु ज्ञान के पश्चात् जब हम क्रियात्मक में उसको लाना प्रारम्भ करते हैं कि जैसे मेंघों का उत्थान हुआ। समुद्रों में बड़वानल नाम की अग्नि का प्रवेश हो गया है।''

मुझे स्मरण आता रहता है, भगवान राम और गोस्वानभानुऋषि महाराज के पुत्र वाचकेतु दोनों को एक समय आचार्य ने समुद्र के तट पर प्रस्थान कराया और कहा, ''तुम अपने वाहन में विद्यमान हो करके समुद्र के तट पर चले जाओ।'' वेद का अध्ययन करने से यह प्रतीत हुआ कि समुद्र बड़वानल नाम की अग्नि हमें प्रतीत होती रहती है। उस बड़वानल नाम की अग्नि को क्रिया में लाने का प्रयास करो। भगवान् राम और ऋषि कुमार दोनों ने समुद्र के तट पर छः माह तक अध्ययन किया। अध्ययन करके पुनः अपने आश्रम में पहुँचे। वहाँ ऋषि ने जब यह प्रश्न किया कि ''क्या तुम उसको क्रियात्मक करके लाये?'' उन्होंने कहा, ''प्रभु! बड़वानल नाम की अग्नि जैसे मानव के शरीर में क्रोध से अग्नि का चलन आ जाता है, क्रोधाग्नि ज्ञान की प्रतिभा को नष्ट कर देती है, इसी प्रकार जब समुद्रों में बड़वानल नाम की अग्नि का प्रहार होता है, बड़वानल नाम की अग्नि का चयन होने लगता है। वह समुद्रों की शान्तता को और समाज की स्थिरता को, वायुमंडल के वैभव को अपने में धारण कर लेती है। इसी प्रकार भगवन! हमें तो कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है।'' जब राम और ऋषि कुमार ने ये वाक्य प्रकट किये तो ऋषि प्रसन्न हो गये। क्रमशः ...

# विद्यार्थियों में जगानी होगी सकारात्मक सोच



डॉ. आनंद शर्मा

भारत दुनिया का वह देश रहा है जो ज्ञान, विज्ञान और दर्शन के मामले में सदा अग्रणी रहा है।

आज भी दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनी के सीईओ भारतीय मूल के लोग हैं। अमेरिका समेत पूरी दुनिया में भारतीयों का अपना दबदबा है। यह दबदबा निरंतर ऐसे ही कायम रहे इसके लिए जरूरत है कि हमारी वर्तमान पीढ़ी और जो हमारे विद्यार्थी छात्र-छात्राएं हैं वह अध्ययनशील बने, उनमें जिज्ञासा और ज्ञान के प्रति रुचि जागृत हो। भारत का प्रत्येक बच्चा विवेकानंद के जैसा गुणी और शीलवन हो सकता है। बस कुछ समस्याओं से निजात पाने की आवश्यकता है। वर्तमान में सोशल मीडिया और फोन के सदुपयोग की आवश्यकता है, अपने गुरुजनों शिक्षकों और माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी और कर्तव्यपरायण बनने की आवश्यकता है। एक कहानी के माध्यम से मैं यह समझना चाहता हूं कि विद्यार्थी यदि अपने चित्, मन, बुद्धि को जागृत करें तो वह किस प्रकार सरलता पूर्वक अपनी पढ़ाई लिखाई को अच्छे से पूर्ण कर सकते हैं और इस देश दुनिया में अपना व भारत का नाम रोशन कर सकते हैं। कहानी कुछ इस प्रकार है।

कोलंबिया विश्वविद्यालय में गणित के एक कोर्स के दौरान एक छात्र कक्षा में सो गया। जब उसकी नींद खुली, तो उसने देखा कि प्रोफेसर ने व्हाइटबोर्ड पर दो समस्याएँ लिखी थीं। उसने सोचा कि ये होमवर्क हैं, इसलिए वह उन्हें अपनी नोटबुक में नोट कर के घर ले गया।

जब उसने उन समस्याओं को हल करने की कोशिश की, तो वे उसे बेहद कठिन लगीं। लेकिन उसने हार नहीं मानी। घंटों लाइब्रेरी में बैठकर उसने संदर्भ पुस्तकों की मदद से अध्ययन किया और अंततः वह एक समस्या को हल करने में सफल हो गया, भले ही यह काफी चुनौतीपूर्ण था। अगली कक्षा में प्रोफेसर ने जब होमवर्क के बारे में कुछ नहीं पूछा, तो वह चकित हुआ और खड़ा होकर पूछा, 'सर, आपने पिछले लेक्चर में दिए गए असाइनमेंट के बारे में कुछ क्यों नहीं पूछा?'

प्रोफेसर ने उत्तर दिया, 'असाइनमेंट? वो तो मैंने केवल ऐसे उदाहरण के तौर पर लिखी थीं जिन्हें अभी तक वैज्ञानिक हल नहीं कर पाए हैं।'

छात्र चौंक गया और बोला, 'लेकिन मैंने उनमें से एक को हल कर लिया है! मैंने इस पर चार पेपर भी लिखे हैं।' उसकी इस उपलब्धि को बाद में मान्यता मिली और कोलंबिया विश्वविद्यालय में उसके लिखे चारों पेपर आज भी प्रदर्शित हैं।

इस कहानी की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि छात्र ने यह नहीं सुना था कि 'इन समस्याओं का कोई हल नहीं है।' उसने सिर्फ यही माना कि ये कठिन प्रश्न हैं, जिन्हें हल करना जरूरी है, और उसने पूरे मन से उन्हें हल करने की कोशिश की झ और सफल हुआ।

यह कहानी हमें याद दिलाती है झ उन लोगों की बात मत सुनो जो कहते हैं कि तुम कुछ नहीं कर सकते। आज की पीढ़ी अक्सर निराशा और नकारात्मकता से घिरी होती है। कुछ लोग जानबूझकर दूसरों के भीतर असफलता और हार का बीज बोते हैं। लेकिन तुम्हारे पास अपनी मंज़िल पाने की ताकत है, बाधाओं को पार करने की शक्ति है, और अपने सपनों को साकार करने का साहस है। बस खुद पर और ईश्वर पर विश्वास रखो झ और लगातार प्रयास करते रहो।

इस छात्र का नाम था जॉर्ज डैंटज़िग, और यह समस्या Math Stack Exchange से ली गई थी।

'डैंटज़िग ने यह सिद्ध किया कि Student's t-test के संदर्भ में, एकमात्र तरीका जिससे हम ऐसी hypothesis testing बना सकते हैं जो standard deviation से स्वतंत्र हो, वह है एक निरर्थक परीक्षण, जो हमेशा समान संभावना से रिजेक्ट या एक्सेप्ट करता है- जो व्यावहारिक नहीं है।'

उपरोक्त कहानी का सारांश यही है कि हमें विद्यार्थियों के अंदर से निराशा और अविश्वास को निकाल बाहर करना है। एक शिक्षक और माता-पिता की यह बड़ी जिम्मेदारी है कि अपने बच्चों को सकारात्मक दृष्टिकोण अवश्य प्रदान करें, यह बालक ही कल का भविष्य है अतः शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक तीनों अपनी जिम्मेदारियां को समझें। यही छात्र-छात्राएं कल अनेक समस्याओं का निवारण प्रस्तुत करेंगे, अनेक अविष्कारों के जनक बनेंगे,

विद्यार्थी भी अपने बल को पहचाने, अपने कल को जाने।

# 'ब्राह्मण' - आखिर है कौन...?



कमलेश पुण्यार्क (गुरुजी)
मैनपुरा, कलेर, अरवल (बिहार)

विजयादशमी के दिन विचार आया कि शास्त्रीजी का आशीर्वाद ले लूँ। अतः ऐन दोपहर में ही पहुँच गया उनकी राममड़ैया में। मडैया की टाटी सरकाकर अन्दर घुसा तो देखा कि शीतलपाटी पर बैठे, शास्त्रीजी एकदम तल्लीन हैं कुछ पुस्तकों से घिरे हुए। बगल में छोटी चौकी पर एक ओर खुला मुँह मसीपात्र और उसके पास ही सहचरी की तरह, सादे कागज पर औंधे मुँह लेखनी भी पड़ी हुई है। खाली पृष्ठ पर मात्र एक वाक्यांश लिखा हुआ है- 'ब्राह्मण' - आखिर है कौन ?

चरणों में सश्रद्ध प्रणाम निवेदन कर, बगल में विछी दूसरी चटाई पर बैठ गया, जो विशेषकर आगन्तुकों के निमित्त ही रखा रहता है हमेशा। अपराह्न में दो-चार श्रद्धालु प्रायः उनके पास बैठे ही रहते हैं और किसी न किसी शास्त्रीय विषय पर चर्चा चलती रहती है। दोपहर का समय होने के कारण अभी कुटिया खाली थी।

कागज पर लिखा वाक्यांश आकर्षक और रोचक लगा। अतः अनुकूल समय जान, मैंने इसी पर चर्चा छेड़ दी- शास्त्रीजी ! लगता है कि आज आप इसी ज्वलन्त विषय पर कुछ लिखने-गुनने में लगे हुए हैं। मेरे मन में भी ये सवाल अकसर घुमड़ते रहता है कि ब्राह्मणकुल में जन्म लेने मात्र से ही हम ब्राह्मण हो गए या और कुछ आवश्यक है?

जैसा कि देखता हूँ- वर्तमान समाज की स्थिति बड़ी विचित्र है। एक ओर ब्राह्मणों को सिरमौर माना जा रहा है तो दूसरी ओर ब्राह्मणों का घोर विरोध भी हो रहा है। सारी सामाजिक विकृतियों का ठीकरा इनके ही माथे फोड़ा जा रहा है। मनुस्मृति नैतिक आचरण का प्रतीक नहीं, बल्कि 'मनुवाद' नामक विकृति का विगुल बनकर बज रहा है वर्तमान समाज में। इतना ही नहीं ब्राह्मणों की पारम्परिक जीविका कथावाचन, कर्मकाण्ड, ज्योतिष, तन्त्र, आयुर्वेद इत्यादि पर भी अन्यान्य वर्ग डाका डालने में लगा है। 'भेषे भीख' वाली लोकोक्ति के हिसाब से कुछ अल्ट्रा मॉडर्न कोट-पैन्ट-टाई वाले हैं, तो कुछ पारम्परिक परिधान का ही अत्याधुनिकीकरण कर लिए हैं- रजाईछाप कुर्ता और साड़ी मार्का रंग-बिरंगी धोती धारण करके। कुछ जटाजूट, भस्म-त्रिपुण्ड वाले हैं, तो कुछ मुगलकट या क्लीनसेव वाले। और इनके बीच होड़ भी अजीब है- नये वाले और पुराने वाले आपस में ही टकराते रहते हैं-एक दूसरे को असली-नकली साबित करने में ज्यादा रुचि रखते हैं। भीषण बेरोजगारी के दौर में नेतागिरी और बाबागिरी ये दो काम धन और प्रतिष्ठा बटोरने में काफी मददगार भी साबित हो रहा है। भ्रष्टाचार बहुल व्यवस्था में जैसे बात-बात में नेता का सहयोग जरुरी लगता है, उसी तरह बात-बात में बाबाओं की जरुरत भी होती ही है। जनमते ही पंडितजी के पतरे की जरुरत पड़ जाती है- ग्रह-गोचर विचारने के लिए। आगे भी हर काम में ब्राह्मण की खोज होती है-विवाह कराने के लिए ब्राह्मण, श्राद्ध कराने के लिए ब्राह्मण, पैर पूजने के लिए ब्राह्मण, पूजा कराने के लिए ब्राह्मण, ग्रह-शान्ति के लिए ब्राह्मण, ग्रह-दान-तुला-दान-छाया-दान लेने के लिए ब्राह्मण, हत्या-भोज खाने के लिए भी ब्राह्मण। और तो और, गाली और उलाहना सुनने के लिए भी ब्राह्मण ही चाहिए।

शास्त्रीजी ! मुझे समझ नहीं आता कि आखिर इन सबके लिए ब्राह्मण ही क्यों चाहिए? कोई और क्यों नहीं? कोई न कोई विशेष बात तो जरुर है इस ब्राह्मण पद या कहें शब्द में या जाति में, जिसके लिए इतनी मारामारी हो रही है समाज में। क्यों दूसरे वर्ग के लोग धड़ल्ले से घुसपैठ कर रहे हैं ब्राह्मणवृत्ति में? या फिर ऐसा है कि जिन्हें अवसर मिल गया, वे छद्मवेष में जम गए समाज में और जिन्हें सफलता नहीं मिली किसी कारण से, वे लोग ब्राह्मणों के सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रभाव को देख कर ईर्ष्यावश विरोध और गाली-गलौज शुरू कर दिए?

दूसरी बात ये कौंधती है सदा मेरे दिमाग में कि किसकी बात को मानू, किसकी बात को इन्कार करूँ ! तुलसीबाबा तो कह कर निकल गए - पूजहिं विप्र शील गुण हीना...। हालाँकि ये भी कहे हैं- पंडित वही जो गाल बजावा...। और इससे भी मजेदार बात ये है कि मनु महाराज के नाम पर एक अलग सूत्र पकड़ाया हुआ है लोगों को जन्मना जायते शूद्रः, संस्काराद्द्विज उच्यते... ।...2और इन मिली-जुली बातों का नतीजा है कि संयोग से जो ब्राह्मण कुल में जन्म पा गए हैं, वो तुलसीबाबा वाली पहली बात को जकड़-पकड़कर बैठ गए हैं- शील-गुण-संस्कार की उन्हें आवश्यकता ही नहीं लग रही है, क्योंकि तुलसीबाबा के कथनानुसार तो हीरे का टुकड़ा भी हीरा ही रहेगा और कोयले का कण भी कोयला ही कहलायेगा न ! यानी कि ब्राह्मण कुल में जन्म ले लिए, इतना ही काफी है। आचार-संस्कार रहे, ना रहे, कोई मतलब नहीं !

और दुर्योग से जो ब्राह्मण कुल में नहीं जन्म ले पाये हैं, वो बेचारे तुलसीबाबा वाले दूसरे सिद्धान्त पर अमल करने में लगे हुए हैं, क्योंकि जन्म लेना भले अपने हाथ में न हो, बहुरूपिया बाबा बनना तो अपने हाथ में है न !

ऐसे में मनुमहाराज वाला सिद्धान्त तुलसीबाबा वाले दूसरे सिद्धान्तवादियों के लिए विशेष सहयोगी हो जाता है। भले ही जन्मना जायते शूद्रः वाली बात बारह अध्यायों और करीब २९०० से अधिक श्लोकों वाली मनुस्मृति में कहीं है ही नहीं, बल्कि स्कन्द आदि अन्यान्य पुराणों में कही गयी है। लेकिन कहीं भी हो, कही तो गई न। फिर इस पर क्यों नहीं ध्यान जाता समाज का ?

मजेदार बात ये है कि तथाकथित बुद्धिमान समाज की स्थिति ये है कि अपनी-अपनी सोच-समझ पहुँच के अनुसार निर्णय ले रहा है। निर्णय लेने का सार्वभौम सिद्धान्त है जहाँ भीड़ दीखे, वहीं भीड़ लगाओ ... कुछ तो खास होगा ही भीड़ में, तभी तो भीड़ है।

स्टैण्ड पर टिके माइक्रोफोन की तरह दोनों हथेलियों पर ठुड्डी टिकाए, बिना टोक-टाक किए, धैर्य पूर्वक इतनी देर तक मेरी बातें सुनने के बाद शास्त्रीजी ने सिर हिलाया। आहिस्ते से खँखारकर, गला तर किए और कहने लगे-

'भीड़ में भीड़ लगाने वाली बात बिलकुल सही कह रहे हो बबुआ ! किन्तु जो व्यक्ति थोड़ा भी समझ रखता है, स्वयं को भीड़ का हिस्सा नहीं बनाना चाहता, वह सोचने-विचारने को विवश हो जाता है 'ब्राह्मण' - ये है कौन ! जन्म लेने वाला या कर्म करने वाला या दोनों अथवा दोनों से ही भिन्न- कोई और...!' फिर तर्जनी नचाते हुए बोले- दरअसल बुद्धि-विवेक के अभाव में, आधी-अधूरी जानकारियाँ बड़ी घातक होती हैं बबुआ ! 'जन्मना जायते शूद्रः' श्लोक का पहला चरण घोख लिए हैं लोग। जबकि पूरा श्लोक कितनों को मालूम है? और यदि मालूम भी है तो उसकी सही व्याख्या और संदर्भ पर कितनों ने विचार किया है? पहले पूरा श्लोक जान लो, फिर इस पर विचार करना। श्लोक है- जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात भवेत द्विजः। वेद पाठात भवेत विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ।। अर्थात - जन्म से तो सभी शूद्र ही होते है; किन्तु संस्कार से उसे द्विज बनाया जाता है। वही फिर वेदादि के पठन-पाठन से विप्र बनता है और अनन्तः ब्रह्म को जान कर ब्राह्मण हो सकता है...।

'स्पष्ट है कि शूद्र से ब्राह्मण तक विकास की ये उत्तरोत्तर प्रक्रिया है और इस समय-साध्य प्रक्रिया में व्यक्ति कहीं भी ठहरा रह जा सकता है। किंचत् पुराणों में ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं कि जन्म ही नहीं जन्मान्तर की जटिल प्रक्रिया है यह यानी एक जन्म में भी पूरा हो सकता है और जन्मान्तर में भी।'

जरा ठहर कर शास्त्रीजी फिर कहने लगे विचारणीय है कि केवल जन्म से ब्राह्मण होना कहाँ तक सही है! और कर्म से कोई भी ब्राह्मण बन सकता है यह कितना सत्य है ! किन्तु किसी निर्णय पर पहुँचने से पूर्व इसके किंचित शास्त्रीय प्रमाणों पर एक दृष्टि डाल लें...।

यथा - ऐतरेय ऋषि दास पुत्र थे। परन्तु उच्च कोटि के ब्राह्मण बने और उन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण और ऐतरेय उपनिषद की रचना की। ऐलूष ऋषि दासी पुत्र थे। जुआरी और दुश्चरित्र भी थे। परन्तु बाद में उन्होंने अध्ययन किया और ऋग्वेद पर अनुसंधानात्मक कार्य किया। फलतः ऋषियों ने उन्हें आमन्त्रित कर आचार्य पद पर आसीन किया। (ऐतरेय ब्राह्मण २.१९) जाबालदर्शनोपनिषद् के प्रणेता सत्यकाम जाबाल गणिका पुत्र थे, परन्तु वे ब्राह्मणत्व को प्राप्त हुए। राजा दक्ष के पुत्र पृषध शूद्र हो गए थे, प्रायश्चित स्वरूप तपस्या करके उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया। (विष्णु पुराण ४.१.१४) राजा नेदिष्ट के पुत्र नाभाग वैश्य हुए। पुनः इनके कई पुत्रों ने क्षत्रिय वर्ण अपनाया। (विष्णु पुराण ४.१.१३) धृष्ट नाभाग के पुत्र थे परन्तु ब्राह्मण हुए और उनके पुत्र ने क्षत्रिय वर्ण अपनाया। (विष्णु पुराण ४.२.२) श्रीमद्भागवत के अनुसार राजपुत्र अग्निवेश्य ब्राह्मण हुए। हारित क्षत्रियपुत्र से ब्राह्मण हुए। (विष्णु पुराण ४.३.५) क्षत्रिय कुल में जन्में शौनक ने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया। (विष्णु पुराण ४.८.१) ऋषि मातंग चाण्डाल पुत्र से ब्राह्मण बने। ऋषि पुलस्त्य का पौत्र, विसश्रवा पुत्र रावण अपने कर्मों से राक्षस बना। राजा रघु का पुत्र प्रवृद्ध राक्षस हुआ। त्रिशंकु राजा होते हुए भी कर्मों से चाण्डाल बन गए। विश्वामित्र क्षत्रिय कुल में पैदा होकर राजर्षि से ब्रह्मर्षि तक पहुँचने के लिए कितना संघर्षरत रहे। महर्षि व्यास के नियोग से उत्पन्न दासी पुत्र विदुर ब्राह्मणोचित कर्मों में लिप्त रहते हुए, हस्तिनापुर साम्राज्य का महामंत्री पद सुशोभित किया।

'किन्तु एक बात और ध्यान देने योग्य है- बीज, क्षेत्र और परिवेश इन तीनों को भी एकदम नकारा नहीं जा सकता। इसके भी यथेष्ट प्रमाण धर्मशास्त्रों में मिलते हैं। संयोग और नियोग की प्रक्रिया भी ध्यातव्य है। बीज और क्षेत्र की समानता को वरीयता या कहें प्राथमिकता तो देनी ही होगी। समान वर्ण के माता-पिता से उत्पन्न सन्तान, अनुलोम वर्ण के माता-पिता से उत्पन्न सन्तान एवं विलोम वर्ण के माता-पिता से उत्पन्न सन्तान- ये तीन स्थितियाँ हुयी। क्या ये तीनों बिलकुल समान हो सकते हैं कभी? निश्चित ही संस्कार और ज्ञानगत उत्तरोत्तर विकास में अन्तर मिलेगा ही। इतना ही नहीं, शास्त्रीय कथनों और संदर्भों का विचार भी करना चाहिए 'शूद्र' और शूद्रवत' का भेद भी समझना चाहिए। एक शूद्र ही है और दूसरा शूद्रवत है-इन दोनों के सांस्कारिक-प्रक्रिया एक समान कैसे हो सकती है! स्पष्ट है कि एक की शुद्धि में अधिक समय और श्रम लगेगा, दूसरे में कम। इसके अलावे 'चातुर्वण्यं मया सृष्टं' के रहस्य को भी ठीक से समझने की जरुरत है। लोहार और सुनार दोनों की हथौड़ियाँ तो एक ही लौहतत्व से बनी होती है, किन्तु दोनों की बनावट और कार्यक्षमता भिन्न होती है। एक का विकल्प दूसरा कदापि नहीं हो सकता।'

क्षणभर ठहर कर शास्त्रीजी ने फिर कहा- 'एक ही परमात्म तत्व से सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन हुआ है। प्रलयकाल में सबकुछ उसी एक तत्व में समाहित हो जाता है। बहती नाली का जल नदी से होते हुए समुद्र में जाकर विलीन हो जाता है। वहाँ पहुँचने पर कोई भेद ज्ञात नहीं होता। किन्तु समुद्र में मिलने से पूर्व तक तो नदी का अस्तित्व या नदी में मिलने से पूर्व तक नाले की स्थिति तो दृष्टिगोचर होती ही है न । अतः गमन या कहो विकास की यात्रा तो विचारणीय होगी न !'

मैंने सिर हिलाते हुए कहा- यानी कुल मिलाकर कहें तो ये जिज्ञासा जटिल है। प्रश्न कठिन है। अतः उत्तर भी कठिन वा जटिल ही होगा ?

शास्त्रीजी मुस्कुरा कर कहने लगे 'विविध ग्रन्थ अपने-अपने हिसाब से ब्राह्मण शब्द की व्युत्पत्ति, निरुक्ति और व्याख्या करते हैं, जिनमें अद्भुत और सारगर्भित है- वज्रसूचिकोपनिषद् । नाम भी बड़ा रोचक है-वज्र यानी हीरा, सूचिका यानी सूई। वज्र का अर्थ कठोर भी होता है। वज्रसूचिका यानी अति तीक्ष्ण सूई भी कह सकते हैं। इस उपनिषद् की काया अति लघु है। विषय-प्रवेश से विषय-समापन तक मात्र ९ सूत्र हैं इसमें। अन्यान्य उपनिषदों की भाँति इसकी शैली भी प्रश्नोत्तर संवाद जैसी ही है, किन्तु प्रश्नकर्ता और समाधानकर्ता का परिचय स्पष्ट नहीं है। अतः इसे आत्मचिन्तन वा आत्माभिव्यक्ति शैली कह सकते हैं।

'ॐ वज्रसूचीं प्रवक्ष्यामि शास्त्रमज्ञानभेदनम्' से प्रारम्भ होकर सच्चिदानन्दमात्मानमद्वितीयं ब्रह्म भावयेदित्युपनिषत्' पर समापन हो गया है इस उपनिषद् का ।

'ऋषि कहते हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण हैं, जिनमें ब्राह्मण ही श्रेष्ठ है-ऐसा वेद-स्मृति आदि के वचन हैं। ऐसे में जिज्ञासा सहज है कि ब्राह्मण है कौन? ब्राह्मण कहते किसे हैं? क्या वह जीव है ? क्या वह शरीर है? क्या वह जाति विशेष है? क्या वह कर्म विशेष है? क्या वह ज्ञान विशेष है? या कि केवल धर्माचरण विशेष है?

'अब उक्त प्रश्नों के समुचित तर्कसंगत, बुद्धिग्राह्य उत्तर की खोज (चिन्तन) करें तो पाते हैं कि ब्राह्मण वह 'जीव' मात्र नहीं हो सकता, क्योंकि भूत-वर्तमान-भविष्य में अनेक जीव थे, हैं और होंगे। उन सबका स्वरूप भी एक समान है। एक जीव होते हुए भी स्वकमार्नुसार जन्म होता है। समस्त शरीरों में जीवों में एकत्व रहता है। अतः सिर्फ जीव होने के नाते ब्राह्मण कैसे कहा जा सकता है?

तो क्या यह शरीर ब्राह्मण है? ऐसा भी तो नहीं है, क्योंकि सभी मानवी शरीर एक समान है। सभी पञ्चभौतिक है। जरा-मरणादि धर्म-अधर्मादि, शारीरिक वर्ण- गौर, श्याम आदि साम्यता है सबमें। ब्राह्मण शरीर ही यदि पिता है तो उसके शरीर दाहोपरान्त ब्रह्महत्या दोष लगना चाहिए था। किन्तु ऐसा होता नहीं है।

'तो क्या जाति (ज्ञाति) ब्राह्मण है ? ऐसा भी तो नहीं है। विभिन्न जातियों और जन्तुओं में अनेक ऋषियों का जन्म हुआ है। यथा-मृगी से श्रृंगी ऋषि, कुश से कौशिक ऋषि, जम्बूक से जाम्बूक ऋषि, वल्मीक से वाल्मीकि ऋषि, धीवरी मत्स्यगन्धा से महर्षि वेदव्यास, शशक से गौतम ऋषि, उर्वशी से ब्रह्मर्षि वशिष्ठ, कुम्भ से अगस्त्य ऋषि आदि उत्पन्न हुए हैं। इससे सिद्ध होता है कि ब्राह्मण किसी जाति विशेष का नाम नहीं हो सकता।

'तो क्या ज्ञान को ब्राह्मण कहा जाए ? ऐसा भी तो नहीं है। क्योंकि क्षत्रिय कुल जात विदेह राजा जनक परमार्थ दर्शन के अद्भुत ज्ञाता हुए हैं। अस्तु, ज्ञान को ब्राह्मण नहीं मान सकते।

'तो क्या कर्म को ब्राह्मण कहा जाए ? किन्तु ये भी तर्कसंगत नहीं लगता। क्योंकि क्रियमाण, संचित, प्रारब्धादि कर्म से अभिप्रेरित व्यक्ति क्रिया करता है, अतः कर्म को ब्राह्मण कैसे मान लिया जाए !

'तो क्या धर्म को ब्राह्मण कहा जाए? किन्तु ये तो और भी सुनिश्चित नहीं है। धर्म वस्तुतः है क्या ? मूलतः हम धर्म कहें किसे? इसे समझना तो और कठिन है। अतः सिर्फ धर्म को ब्राह्मण कदापि नहीं माना जा सकता।

'तर्हि को ब्राह्मणो नाम-तब ब्राह्मण कहें किसे?'- इतना कह कर शास्त्रीजी मेरे चेहरे पर घूरते हुए चुप हो गए। मानों मुझसे सवाल कर रहे हों। मैं निरुत्तर मौन रहा ।

जरा ठहर कर फिर कहने लगे- ' संक्षेप में तुम इतना ही समझ लो बबुआ ! कि ब्राह्मण एक अवस्था विशेष है, स्थिति विशेष है। ब्राह्मण उसे कहेंगे जो द्वैतभाव से किंचित मात्र भी युक्त न हो। जाति, गुण, क्रियादि समस्त दोषों से सर्वथा मुक्त हो चुका हो। सत्य, ज्ञान, आनन्द स्वरूप स्वयं निर्विकल्प स्थिति में सदा रहने वाला हो । अनन्त कल्पों के आधार रूप, समस्त प्राणी-पदार्थों के अन्त में भी निवास करने वाला हो, वाह्याभ्यन्तर आकाशवत संव्याप्ति हो जिसकी, हा रखे...7

आंवले के फल की भाँति आत्मा का साक्षात्कार हो जिसे, शम-दम, राग-द्वेष, काम-क्रोध, लोभ-मोह, मद-मत्सर, आशा-तृष्णा, दम्भ-अहंकारादि समस्त भावों से रहित हो यानी सर्वथा विशुद्ध चित्त हो जिसका वही पूर्णरूप से ब्राह्मण कहा जा सकता है। ऐसी ही श्रुति-स्मृति-पुराणादि का संकेत है। उक्त लक्षणों-गुणों-भावों से ही ब्राह्मणत्व सिद्ध होता है। आत्मा ही सत्-चित्-आनन्द स्वरूप अद्वितीय है। यानी ब्रह्मभाव सम्पन्न ही ब्राह्मण है-यही उपनिषद् का मत है। अस्तु ।।


RNI No. 62592/95 स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक चंद्रशेखर शास्त्री ने भारती प्रिंटर्स, निकट पुरानी स्टील चुंगी, लोअर बाजार, मोदीनगर-201204, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित किया।
सम्पादकः चन्द्रशेखर शास्त्री, मोबाइलः 7351200046/9411246969, email: u.p.observer@gmail.com

# मुख्यमंत्री योगी ने किया महाराजा सुहेलदेव की प्रतिमा का अनावरण

उत्तर प्रदेश के मुखिया परमपूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने बहराइच के चित्तौरा झील के समीप राष्ट्ररक्षक महाराज सुहेलदेव की 40 फीट ऊँची कांस्य-प्रतिमा के अनावरण के साथ महाराज सुहेलदेव का विजयोत्सव-दिवस मनाया। समारोह के पूर्व माननीय मुख्यमन्त्री जी ने अपने फेसबुक पेज पर लिखा-

'धर्म और धरा की रक्षा के लिए विदेशी आक्रान्ताओं का समूल नाश करनेवाले परम प्रतापी महाराजा सुहेलदेव जी राष्ट्ररक्षा, आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना के प्रेरणास्रोत हैं।

महाराजा सुहेलदेव जी के 'विजयोत्सव' के अवसर पर बहराइच में उनकी प्रतिमा के अनावरण का सौभाग्य प्राप्त होगा। इस अवसर पर जनपद के समग्र विकास हेतु विभिन्न जन-कल्याणकारी परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास भी किया जायेगा।'

विजयोत्सव-दिवस समारोह में सम्मिलित होने के पश्चात् परमपूज्य महाराज जी ने अपने आधिकारिक फेसबुक पेज पर पुनः लिखा-

'महर्षि बालार्क की तपोस्थली जनपद बहराइच में आज चक्रवर्ती सम्राट्, राष्ट्ररक्षक महाराजा सुहेलदेव जी के 'विजय उत्सव' कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ। इस अवसर पर महाराजा सुहेलदेव जी की स्मृतियों को सँजोये भव्य स्मारक का उद्घाटन एवं उनकी दिव्य प्रतिमा का अनावरण किया, साथ ही जनपदवासियों को ₹ 1,243 करोड़ लागत की लोक-कल्याणकारी परियोजनाओं की सौगात दी। आज आत्मा आनन्दित है कि महाराजा सुहेलदेव जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर डबल इंजन की सरकार को प्राप्त हुआ है।

महाराजा सुहेलदेव जी को नमन एवं विनम्र श्रद्धांजलि !'

एक ओर जहाँ प्रदेश के कैबिनेट मन्त्री ओमप्रकाश राजभर एवं अनिल राजभर और उनका जातीय संगठन महाराज सुहेलदेव को राजभर सिद्ध करने के लिए द्यावापृथिवी एक करता

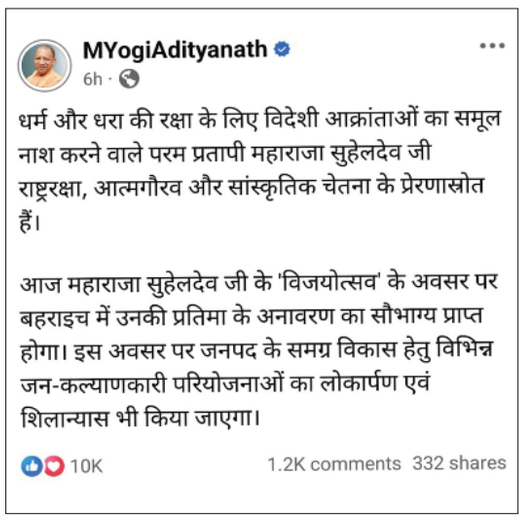


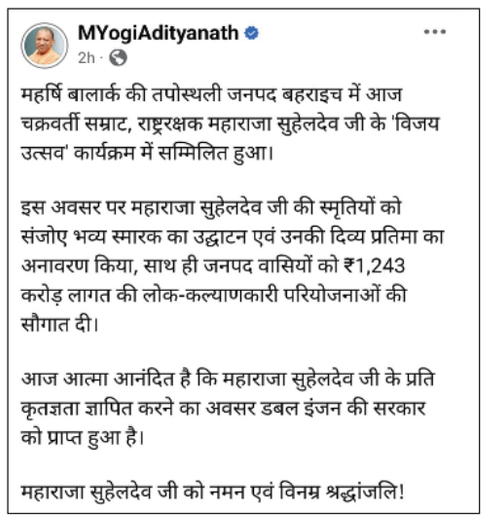


रहा है, वहीं श्री राजपूत करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष श्री राकेश सिंह रघुवंशी एवं उनकी सशक्त टीम का आत्मबल सच्चाई के लिए संघर्षशील रहा है। पयागपुर के अन्तिम शासक एवं लोकतन्त्रिक देश के जनप्रिय स्वतन्त्र प्रतिनिधि राजा वीरेन्द्रविक्रम सिंह (1907-1960 ई.) ने आज सत्तर वर्ष पूर्व, जब आज के तथाकथित जातीय झण्डाबरदारों का जन्म भी नहीं हुआ था, तब चित्तौरा झील के तटबन्ध पर महाराज सुहेलदेव की प्रतिमा स्थापना के साथ ही उनका मन्दिर बनवाया था। आज परमपूज्य महाराज जी की फेसबुक-पोस्ट और विजयोत्सव-कार्यक्रम में प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन मन्त्री श्री जयवीर सिंह, बहराइच के प्रभारी मन्त्री श्री सूर्यप्रताप शाही, बहराइच के माननीय सांसद आनन्दकुमार गौड़ के भाषण के साथ ही श्रद्धेय महाराज जी के निष्पक्ष उद्बोधन से सुहेलदेव के क्षत्रित्व का सूर्योदय हो गया है। इसके पूर्व 17 फरवरी, 2019 ई. को 'वसन्त पंचमी' के अवसर महाराज सुहेलदेव के जन्मोत्सव-कार्यक्रम में भी परमपूज्य महाराज जी ने महाराज सुहेलदेव के क्षत्रियत्व पर अपनी मुहर लगायी थी।

यह कार्यक्रम सचमुच ऐतिहासिक था। परमपूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने जहाँ महाराजा बिजली पासी, वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना महारानी अवन्तीबाई लोधी, वीरांगना झलकारीबाई लोधी एवं वीरांगना उदादेवी पासी का जातीय आस्पदयुक्त उल्लेख किया, वहीं ओमप्रकाश राजभर की पार्टी 'सुभासपा' से गठबन्धन होने और ओमप्रकाश एवं अनिल राजभर के अनेकशः पूर्वाग्रह के बाद भी मुख्यमन्त्री ने राष्ट्ररक्षक महाराज सुहेलदेव को 'राजभर' नहीं कहा।

उनकी कैबिनेट के दोनों राजभर मन्त्रियों के अतिरिक्त किसी अन्य मन्त्री ने भी महाराज सुहेलदेव को राजभर नहीं कहा। यह वस्तुतः मेरी ऐतिह्य-साधना और श्रीराम की अयोध्या में दिये गये अकाट्य ऐतिह्य-साक्षों के अतिरिक्त श्री राजपूत करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष श्री राकेश सिंह रघुवंशी और उनकी सशक्त टीम के निःस्वार्थ निष्पक्ष संघर्ष की विजय है।

इस विजयोल्लास के अवसर पर आइए पढ़ते हैं- एक बार पुनः महाराज सुहेलदेव का वास्तिक इतिहास...

***ज्वलंत विषय पर सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह 'संजय' का आलेख...***

# श्रावस्ती-भुक्तिपाल राष्ट्ररक्षक महाराज सुहेलदेव का विजयोत्सव-दिवस

डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह 'संजय'

धर्म-अध्यात्म एवं संस्कृति के साथ साथ राष्ट्रीय अस्मिता और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करनेवाले राष्ट्रपुत्रों के अद्वितीय बलिदान से भारतीय इतिहास के प्रत्येक पृष्ठ रँगे हुए हैं। राष्ट्रीय चेतना के एक ऐसे ही ज्योतिपुंज महाराज सुहेलदेव हैं। महाराज सुहेलदेव कन्नौज के प्रतापी प्रतिहार सम्राटों के शासनकाल में श्रावस्ती भुक्ति के भुक्तिपाल थे। प्रतिहार राजवंश का इतिहास अयोध्या के सूर्यवंश से ही सम्पृक्त है। प्रतिहार-नरेश मिहिरभोज (833-885 ई.) की ग्वालियर-प्रशस्ति के अनुसार प्रतिहार राजवंश का उद्भव अयोध्या के सूर्यवंश से ही हुआ है-

**आत्मारामष्लादुपार्ज्यविजरं**
**देवेनदित्यद्विशः**
**ज्योतिर्व्विजमकृत्तिमे गुणवती क्षेत्रे यदुमं पुरा।**
**श्रेयः कन्दवपुस**
**ततस्सम्भवद्भास्वान्तशोहापरे**
**मन्विक्ष्वाकु ककुत्स्थ मूल पृथवः क्षमापाल कल्पद्रुमः।।**
**तेषां वंशे सुजन्मा क्रमनिहितपदे**
**धाम्नि वज्रेषु घोरं**
**रामः पौलस्त्यहिंस्त्रक्षतविहित समित् कर्मचक्रे पलाशैः।**
**श्लाघ्यस्तस्यानुजो सौ मघवामदमुशो**
**मेघनादस्यसंख्ये**
**सौमित्रृस्तिवरडण्डः प्रतिहरणविधेर्यः प्रतिहारासीत।।**

-एपीग्राफिया इण्डिका (1925-26 ई.), पृ. 107

अर्थात् मनु, इक्ष्वाकु तथा ककुत्स्थ जिस वंश के मूल सम्राट् थे, उनके ही वंशज और रावणान्तक राम के अनुज, जो राम के सशक्त प्रतिहार थे, और जिन्होंने मेघनाद जैसे शत्रु को युद्ध में परास्त किया था, उन लक्ष्मण से ही यह प्रतिहार वंश प्रचलित हुआ। 810 ई. से 1036 ई. के मध्य नागभट्ट द्वितीय (810-833 ई.), रामभद्र (833-836 ई.), मिहिरभोज (836-885 ई.), महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.), भोज द्वितीय (910-912 ई.), विनायकपाल (912-944 ई.), महेन्द्रपाल द्वितीय (944-947 ई.), देवपाल (947-953 ई.), विनायकपाल द्वितीय (953-957 ई.), विजयपाल (957-988 ई.), राज्यपाल (988-1019 ई.), त्रिलोचनपाल (1019-1035 ई.) एवं यशपाल (1035-1036 ई.) नामक 13 प्रतिहारवंशीय शासकों का कन्नौज पर शासन रहा। इस कालावधि में अयोध्या कन्नौज के ही अधीन रही। अवधवासी लाला सीताराम अपनी पुस्तक 'अयोध्या का इतिहास' में लिखते हैं- 'आठवीं शताब्दी में अयोध्या कन्नौज के शासन में चली गयी। परिहारों का राज कन्नौज से 160 मील उत्तर श्रावस्ती से काठियावाड़ तक और कुरुक्षेत्र से बनारस तक फैला हुआ था।' (पृष्ठ 140)।

प्रतिहारों के समय में कोसलप्रान्त अथवा श्रावस्तीभुक्ति के भुक्तिपाल बैस क्षत्रिय थे। बैस राजवंश के राजा त्रिलोकचन्द्र ने सन् 918 ई. में दिल्ली के राजा विभवपाल को परास्त कर कोसलप्रान्त पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। श्रावस्तीभुक्ति का राज्य त्रिलोकचन्द्र के पुत्र भुक्तिपाल मयूरध्वज को मिला। उसके बाद क्रमशः त्रिलोकचन्द्र के वंशजों- हंसध्वज, मकरध्वज, सुधन्वाध्वज (प्रसेनजित्) और सुहृदध्वज के अधिकार में ही श्रावस्तीभुक्ति का शासन रहा। भुक्तिपाल सुहृदध्वज का लोकप्रसिद्ध नाम महाराज सुहेलदेव है। महाराज सुहेलदेव अत्यन्त वीर एवं साहसी शासक थे।

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के द्वारा स्थापित लोकरुचि प्रकाशन से प्रकाशित 'राष्ट्ररक्षक महाराज सुहेलदेव' के लेखक डॉ. परशुराम गुप्त ने महाराज सुहेलदेव का परिचय देते हुए लिखा है- 'महाराज सुहेलदेव का जन्म माघ महीने की वसन्त पंचमी के दिन 990 ई. को श्रावस्ती के राजा प्रसेनजित के यहाँ हुआ था। इनकी माता महारानी जयलक्ष्मी चन्देल वंश की एक वीर क्षत्राणी थीं। 'आईना-ए-मसऊदी' में इनका नाम सहरदेव बताया गया है। इन्हें सुहृदध्वज व सुहृददेव के नाम से भी जाना जाता है।' (पृष्ठ 51)।

प्रतिहार वंश के बारहवें शासक त्रिलोचनपाल (1019-1035 ई.) के राजत्वकाल में महमूद गजनवी के भांजे सैयद सालार मसऊद गाजी ने अयोध्या पर आक्रमण किया। 1033 ई. में सालार मसऊद ने अयोध्या के रामजन्मभूमि-मन्दिर को ध्वस्त करने की इच्छा से अयोध्या पर चढ़ाई की, किन्तु उस समय सम्राट् त्रिलोचनपाल की श्रावस्तीभुक्ति के महाबली भुक्तिपाल महाराज सुहेलदेव ने सत्रह स्थानीय राजाओं का संघ बनाकर सालार मसऊद से भयंकर युद्ध किया। डॉ. परशुराम गुप्त का मानना है कि गोण्डा, बहराइच, लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव एवं लखीमपुर में महाराज सुहेलदेव के सहयोगी राजभर राजा राज्य करते थे, जिनकी संख्या 21 थी (पृष्ठ 2)। वस्तुतः महाराज सुहेलदेव का जन्म सूर्यवंश की बैस शाखा में हुआ था। बैस राजवंश का उद्भव भी प्रतिहार राजवंश की तरह ही रामानुज लक्ष्मण से हुआ है। लक्ष्मण के वंशजों की एक शाखा कालान्तर में वैशाली में स्थापित हो गयी। पुनः वैशाली से आकर उन लोगों ने कन्नौज में अपना साम्राज्य स्थापित किया। वैशाली से आने के कारण उन शासकों ने अपने को बैस कहा। रामानुज लक्ष्मण को शेषनाग का अवतार माना जाता है। इसलिए उनका वंशज होने के कारण बैस राजवंश के शासकों ने अपने राजकीय चिह्न में 'नाग-प्रतिमा' को स्थान दिया, जिससे कतिपय इतिहासकार उन्हें नागवंशी भी मानते हैं। अयोध्या के विश्वविख्यात सूर्यवंश से निकले बैस राजवंश का कुलदीपक होने के कारण ही

महाराज सुहेलदेव का ननिहाल कालिंजर के चन्देल राजवंश में था।

महाराज सुहेलदेव ने 14 जून, 1033 ई. को बहराइच से 7 कोस दूर पयागपुर के सन्निकट घाघरा नदी के तट पर सालार मसऊद समेत उसकी सेना को नष्ट कर डाला। सूर्यवंश की बैस क्षत्रिय शाखा में पैदा हुए महाराज सुहेलदेव की वीरता को अमरत्व प्रदान करने के लिए अवधप्रान्त के प्रतिष्ठित कवि कीर्तिशेष पण्डित गुरुसहाय दीक्षित 'द्विजदीन' ने 1940 ई. में 'श्रीसुहेल-बावनी' का प्रणयन किया। महाराज सुहेलदेव से सालार मसऊद के अत्याचार का वर्णन करते हुए रक्षा की गुहार करती प्रजा के मनोभावों का चित्रण करते हुए कविवर द्विजदीन लिखते हैं-

**भानुकुल भूप विनै सुनौ श्री सुहेलदेव,**
**घाघरा पै घोर सेन घुमड़ति आवै है।**
**तोरत जनेऊ और काटत गऊगन त्यों,**
**झोंटी झूड़ि बाँधे झण्डा झुमड़ति आवै है।**
**कवि 'द्विजदीन' समुहान सूरमा न कोऊ,**
**मान गरुआन अति अकड़ति आवै है।**
**गजनी निवासी साहू सैयद सलार संग,**
**जीत की उमंग मढ़यौ उमड़ति आवै है।।**
**- श्रीसुहेल-बावनी, छन्द संख्या 19**

उपर्युक्त छन्द में कवि द्विजदीन ने स्पष्ट रूप से महाराज सुहेलदेव को भानुकुल भूप (सूर्यवंशी नरेश) कहा है। इसी तरह एक अन्य घनाक्षरी में 'अंशुमाली अंश है कि अंशुमान तेरे सर, अन्धाधुन्ध वेधि डारै बैरिन के झुण्ड को' (श्रीसुहेल-बावनी, छन्द संख्या 27) लिखकर कवि द्विजदीन ने महाराज सुहेलदेव के सूर्यवंशी शौर्य का स्मरण किया है। श्रावस्ती से युद्ध के लिए निकले महाराज सुहेलदेव की वीरता का वर्णन करते हुए कवि की लेखनी का चमत्कार देखने योग्य है। निम्नांकित छन्द में कवि द्विजदीन ने महाराज सुहेलदेव को 'भानुकुल भूप' (सूर्यवंशी नरेश) कहा है-

**स्रावती नगर तै कढ़ूयौ है श्री सुहेलदेव,**
**संग चतुरंग रन रंग भरकै लगे।**
**हय लागे हींसन त्यों गज चिक्करन लागे,**
**ज्वानन के आँख के तरेरे तरकै लगे।**
**कवि 'द्विजदीन' दिग्गजन पै दरेरा पर्यो,**
**हेरा पर्यो हर की औ' सेस सरकै लगे।**
**आतुर तुरक दल खण्डन को मण्ड रन,**
**भानुकुल भूप भुजदण्ड फरकै लगे।।**
**-श्रीसुहेल-बावनी, छन्द संख्या 28**

कविवर द्विजदीन ने एक अन्य छन्द में 'जाति को पनाह देत बैरिन को दाह देत, छत्रिन उछाह देत मोद अंशुमाली को' (श्रीसुहेल-बावनी, छन्द संख्या 51) लिखकर उनके सूर्यवंशी क्षत्रिय होने का संकेत किया है। इसी तरह उन्होंने आगे पुनः लिखा है- 'भानुकुल भूषण सँभार्यो निज तेज तौलौं, गुन पै सँवार्यो अर्धचन्द्र विकरारी को' (श्रीसुहेल-बावनी, छन्द संख्या 57)। 'श्रीसुहेल-बावनी' में महाराज सुहेलदेव और सालार मसऊद की सेना के मध्य हुए भीषण संग्राम का रोमांचक वर्णन किया है। महाराज सुहेलदेव की तलवार का वर्णन करते हुए द्विजदीन लिखते हैं-

**देखत मियान कौं मियान तैं निकरि आयी,**
**नंगी नंगी नचति नहानी सोन कन में।**
**रुण्ड पिचकारी करि मारति फुहारे लाल,**
**लाल लाल मुण्डन उछारे कुम्कुमन में।**
**'द्विजदीन' घाघरा कौ घोरि लाल लाल कीन्ही,**
**पावै ताहि लाल करि डारै एक छन में।**
**भूपति सुहेलदेव तेरी करवाल है कि,**
**बार-बनिता है होली खेलत नरन में।।**
**- श्रीसुहेल-बावनी, छन्द संख्या 34**

सालार मसऊद युद्ध में मार डाला गया। सैयद सालार मसऊद की मृत्यु के तुरन्त बाद अजमेर से मुज़फ़्फर खान सहायता के लिए आया। महाराज सुहेलदेव ने मुजफ़्फर खान का भी वध कर दिया। सैयद सालार मसऊद का अयोध्या-विजय का स्वप्न इसलिए भी अधूरा रह गया कि उसके विरुद्ध अयोध्या के दिगम्बर साधुओं ने भी विद्रोह कर दिया। तत्कालीन इतिहासकार शेख अब्दुर्रहमान चिश्ती ने इस युद्ध का रोमांचक वर्णन करते हुए अपनी पुस्तक 'मीरात-ए-मसूदी' में किया है। शेख अब्दुर्रहमान चिश्ती को उद्धृत करते हुए ब्रजगोपाल राय 'चंचल' लिखते हैं- 'वे नाकूस बजाते थे, घण्टा हिलाते थे। बड़े सोरहे आतफाक थे।

वे बड़े महन्त जो मोहनभोग लगाते थे, वे बढ़कर तलवार का वार भी करते थे। चोटी के जरार थे। हिन्दू में नामूदार थे। लात-वमनात पर जान से फिदा थे।...इस्लाम के नाम पर जो अन्धड़ अयोध्या, बहराइच तक जा पहुँचा था, वह सब नष्ट हो गया। इस युद्ध में अरब-ईरान के हर घर का चिराग बुझा। दो सौ वर्षों आगे तक मुसलमान भारत पर हमला करने का मन नहीं बना सके। दो सौ वर्षों तक के ज्यादा समय तक यहाँ बुतपरस्ती जारी रही और हुनूद (हिन्दू) की अमलदारी रही।' (मन्दिर वहीं बनायेंगे मगर क्यों?, पृष्ठ 56) अवधवासी लाला सीताराम लिखते हैं- 'सैयद सालार मसऊद गाजी ने अवध पर आक्रमण किया और बहराइच में अपनी हड्डियाँ सड़ने को छोड़ गया।' (अयोध्या का इतिहास, पृष्ठ 141)।

वर्तमान में जातीय राजनीति के कुचक्र-जाल में फँसे कतिपय स्वार्थी नेताओं ने महाराज सुहेलदेव को राजभर कुल में पैदा हुआ बताकर महाराज सुहेलदेव के गौरवशाली इतिहास को नष्ट करने का अक्षम्य अपराध किया है।

भारत की एकता-अखण्डता के लिए विदेशी आक्रान्ताओं का दमन करनेवाले महाराज सुहेलदेव स्वप्न में भी नहीं सोचे होंगे कि कभी ऐसा भी समय आयेगा, जब उनकी जाति ही बदल दी जायेगी। वस्तुतः महाराज सुहेलदेव की वीरता राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत थी। जिस कालखण्ड में महाराज सुहेलदेव का जन्म हुआ था, उस कालखण्ड में शासन-सूत्र क्षत्रियों के हाथ में था, किन्तु क्षत्रिय-शासकों के मनःमस्तिष्क में जातिवाद की सड़ी-गली कुत्सित भावना को रंचमात्र स्थान प्राप्त नहीं हुआ था। उस समय राष्ट्रधर्म ही सर्वोपरि था। तब तक जातिधर्म का उदय नहीं हुआ था।

इसलिए राजा और प्रजा के मध्य पिता और पुत्र जैसा सम्बन्ध था। वास्तव में तब राजा, प्रजा का धर्मपिता हुआ करता था। इस बात को स्पष्ट करते हुए 'राष्ट्ररक्षक महाराज सुहेलदेव' नामक पुस्तक के प्रकाशक ने लिखा है- 'श्रावस्ती नरेश महाराज सुहेलदेव ने अपने साथी हिन्दू राजाओं के साथ 1034 ई. में बहराइच की धरती पर हिन्दू धर्म का विनाश कर रहे लगभग साढ़े तीन लाख जेहादियों का समूल सर्वनाश कर सनातन धर्म की रक्षा की थी, इसी कारण राजभर समुदाय उन्हें ईश्वर का अंशावतार मानता है।' (अन्तिम फ्लैप पर मुद्रित)। ऐसे प्रतापी शासक को आजादी के बाद शनैः शनैः राजनीतिक चश्मे से देखा जाने लगा और उनके प्रतापी उत्तराधिकारियों का नाम विस्थापित करके उनके स्थान पर भर, राजभर अथवा पासी जाति के लोगों का नाम चिपका दिया गया। विश्व हिन्दू परिषद् के अग्रदूत अशोक सिंघल लिखते हैं- 'कैसा आश्चर्य है कि उन महाराज सुहेलदेव के वंशजों को न जाने कब और कैसे तथाकथित छोटी जाति का मान लिया गया।'

सही बात तो यह है कि क्षत्रियों के साथ साथ राजभर, पासी, सोनकर, खटिक, अहीर आदि सनातन धर्म की रक्षा करनेवाली लड़ाकू जाति रही है। क्षत्रियों की अपराजेय सेना इन्हीं लड़ाकू जातियों के बल पर राष्ट्ररक्षा करने में समर्थ रही है। कालान्तर में आंग्ल शासकों ने हिन्दुओं के मनःमस्तिष्क में छोटे-बड़े का जहर घोलकर सम्पूर्ण हिन्दू-समाज के सामाजिक ताने-बाने को नष्ट कर दिया। इसलिए आज प्रत्येक जाति केवल अपने अपने महापुरुषों का स्मरण करती है।

आजादी के पूर्व आंग्ल-शासकों ने और आजादी के बाद राष्ट्रीय चेतना से वंचित सरकारों ने भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का बहुत अधिक नुकसान किया। आज समय बदल चुका है।

आज राष्ट्रीय चेतना का उन्नत ध्वज निरभ्र आकाश में फहर रहा है। केन्द्र की मोदी सरकार और प्रदेश की योगी सरकार राष्ट्रीयता की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए कटिबद्ध है। विदेशी विधर्मी आक्रान्ता सैयद सालार मसऊद गाजी की स्मृति में शताब्दियों से मनाये जा रहे बहराइच-मेले को योगी आदित्यनाथ की राष्ट्रोत्कर्षिणी सरकार ने न केवल समाप्त किया, अपितु उस विधर्मी आक्रान्ता का वध करनेवाले श्रावस्तीभुक्ति के राष्ट्ररक्षक भुक्तिपाल महाराज सुहेलदेव की 40 फीट ऊँची अश्वारूढ़ कांस्य-प्रतिमा की स्थापना करने के साथ ही धूमधाम से महाराज सुहेलदेव का विजयोत्सव-दिवस भी मना रही है। जब सम्पूर्ण राष्ट्र 'वर्तमान' के 'ऑपरेशन सिन्दूर' से गौरवान्वित है, तब निश्चय ही महाराज सुहेलदेव का विजयोत्सव-दिवस 'अतीत' के कालपट्ट पर शत्रुसूदनी खड्ग का हस्ताक्षर सिद्ध होगा।

# यूपी में पर्यटन को और लगेंगे पंख, राष्ट्रीय स्तर की संभावनाओं से मिल रहे पुख्ता संदेश

## पर्यटन के साथ सुधरेगी अर्थव्यवस्था, बढ़ेंगे रोजी-रोजगार के अवसर

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**लखनऊ।** योगी सरकार के प्रयासों से आने वाले समय में यूपी में पर्यटन को और पंख लगेंगे। द वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म काउंसिल (हळळउ) ने राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन के परिदृश्य के बारे में जो पूर्वानुमान जताया है उससे तो इस बात के पुख्ता संकेत मिल रहे हैं। इन संकेतों में छिपी संभावनाओं को सच में तब्दील करने को योगी सरकार पूरी तरह योजनाबद्ध तरीके से प्रतिबद्ध भी है। प्रदेश में विदेशी और घरेलू पर्यटकों की आमद बढ़ने के साथ ही इनके द्वारा यात्रा, रहने, खाने और यादगार के रूप में स्थानीय उत्पादों के खरीदे जाने से अर्थव्यवस्था तो सुधरेगी ही, इससे जुड़े ट्रांसपोर्टेशन, होटल, होम स्टे, गाइड आदि सेक्टर्स में रोजी-रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

### क्या कहती है डब्ल्यूटीटीसी की रिपोर्ट

डब्ल्यूटीटीसी की रिपोर्ट के अनुसार साल 2024 के राष्ट्रीय पर्यटन संबंधी आंकड़े 2019 के सभी मानकों को पीछे छोड़ चुके हैं। संस्था ने 2030 तक के लिए जो पूर्वानुमान जताए हैं वे बेहद ही संभावनाओं वाले हैं। भगवान श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या, राधाकृष्ण की जन्मभूमि और कर्मस्थली ब्रजभूमि उत्तर प्रदेश में ही है। तीरथराज प्रयाग, विश्व की सबसे पुरातन नगरी एवं तीनों लोकों से न्यारी शिव की काशी, दुनिया को शांति और अहिंसा के संदेश से प्रकाशित करने वाले भगवान बुद्ध से जुड़े सभी प्रमुख स्थल कुशीनगर, सारनाथ, कपिलवस्तु भी उत्तर प्रदेश में हैं। इन सब वजहों से देश में बढ़ते पर्यटन के कारण यूपी में पर्यटन की संभावना भी बढ़ जाती है। यह हो भी रहा है। सरकारी आंकड़े इसकी तस्दीक भी कर रहे हैं।

ऐसा हो इसके लिए संभावना वाले टूरिज्म स्पॉट को केंद्र बनाकर योगी सरकार पर्यटकों की सुरक्षा और सुविधा के लिए वैश्विक स्तर की बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराने को प्रतिबद्ध है। प्राथमिकता बनाकर चरणबद्ध तरीके से यह काम हो भी रहा है। इसमें केंद्र सरकार का भी विभिन्न योजनाओं के जरिये भरपूर सहयोग मिल रहा है। डब्ल्यूटीटीसी के अनुसार देश के लिए पर्यटन के लिहाज से साल 2025 रिकॉर्ड ब्रेकिंग हो सकता है। इसकी वजह से देश की अर्थव्यवस्था में इस सेक्टर का योगदान 22 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। इस पूर्वानुमान के अनुसार टूरिज्म सेक्टर से जुड़े सेक्टर्स में रोजगार पाने वालों की संख्या 48 मिलियन से अधिक हो सकती है। संस्था की ओर से साल 2030 के लिए जताए गए पूर्वानुमान के अनुसार पर्यटन से अर्थव्यवस्था को मिलने वाला योगदान 42 लाख करोड़ और रोजगार बढ़कर 64 मिलियन हो जाएगा। इन आंकड़ों में ही उत्तर प्रदेश के टूरिज्म सेक्टर की भी संभावनाएं छिपी हैं। खासकर धार्मिक पर्यटन के लिहाज से। सरकार भी इसे जानती और स्वीकार करती है। इसीलिए ऐसे स्थलों के विकास पर उसका सर्वाधिक फोकस भी है। खुद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अनुसार, ₹धार्मिक पर्यटन की संभावनाओं को बढ़ावा देने के प्रयास न केवल आस्था को आह्लादित करते हैं, बल्कि अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाते हैं। केंद्र सरकार की स्वदेश दर्शन, प्रसाद तथा रामायण, कृष्ण, बौद्ध सर्किट जैसी योजनाओं ने पर्यटन विकास को गति दी हैं। उत्तर प्रदेश की डबल इंजन सरकार ने इन क्षेत्रों में सड़क, परिवहन, रुकने की सुविधाएं और सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए कई ठोस कदम उठाए है। पर्यटन के प्रति बढ़ते रुझान और सरकार की प्रभावशाली नीतियों के चलते प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसरों में अभूतपूर्व वृद्धि के साथ स्थानीय स्तर पर युवाओं के लिए रोजी-रोजगार के अवसर बढ़े हैं। स्थानीय हस्तशिल्प एवं स्थान विशेष की पहचान बने उत्पादों को खूब लाभ मिला है। इन पर्यटन स्थानों में हुए विकास से युवा उद्यमियों और स्टार्टअप्स को भी नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

### पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए योगी सरकार द्वारा किए जा रहे कार्य

#### टूरिज्म सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए सरकार प्रयासरत

4560 करोड़ रुपये की लागत से धार्मिक स्थलों को जोड़ने वाले 272 मार्गों का विकास करा रही है। महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों पर आने वाले घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों को वैश्विक स्तर की बुनियादी सुविधाएं मिलें, इसे ध्यान में रखते हुए वहां विकास कार्य हो रहे हैं। मसलन लखनऊ, प्रयागराज, कपिलवस्तु में हेलीपोर्ट सेवा शुरू हो चुकी है। कुछ अन्य प्रमुख पर्यटन स्थलों को भी शीघ्र ही इस सेवा का लाभ मिलने लगेगा। अयोध्या शोध संस्थान का उच्चीकरण, अंतरराष्ट्रीय रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान की स्थापना भी हो रही है। कुशीनगर में बुद्धा थीम पार्क परियोजना, सीतापुर स्थित नैमिषारण्य तपोस्थली पर वेद विज्ञान अध्ययन केंद्र की स्थापना के साथ नैमिष तीर्थ एवं शुक्र तीर्थ का पुनरुद्धार किया गया है। गोरखपुर में परमहंस योगानंद जी की जन्मस्थली के पुनरोद्धार के साथ गंगा के किनारे जिस श्रृंगवेरपुर में वनगमन के दौरान भगवान श्रीराम और निषादराज गुह्य का मिलन हुआ था, जहां से वे गंगा पार कर प्रयागराज होते हुए चित्रकूट गए थे उसे सरकार पर्यटन स्थल के रूप में विकसित कर रही है। योगी सरकार उत्तर प्रदेश में पड़ने वनगमन मार्ग के उन सभी प्रमुख स्थलों की विकसित कर रही है जहां राम ने पत्नी सीता एवं भाई लक्ष्मण सहित कुछ समय गुजारे थे।

#### पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बने सर्किट

नियोजित विकास के लिए योगी सरकार ने अलग-अलग पर्यटन स्थलों के लिए सर्किट बनाएं हैं। इनमें रामायण, महाभारत बौद्ध, शक्तिपीठ, जैन, आध्यात्मिक, कृष्ण ब्रज, सूफ़ी कबीर धार्मिक लिहाज से महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा हाल के वर्षों में लोगों की पसंद बने एडवेंचर, इको टूरिज्म के लिए बुंदेलखंड एवं वाइल्ड लाइफ इको टूरिज्म सर्किट भी हैं। प्रदेश की बेहद संपन्न परंपरा को टूरिज्म के जरिये बढ़ावा देने के लिए शिल्प सर्किट भी है।

#### प्रमुख मेलों का आकर्षण बढ़ाने के लिए किया प्रांतीयकरण

स्थान विशेष पर परंपरागत रूप से चले आ रहे मेलों को प्रोत्साहन देने के लिए योगी सरकार ने कुछ मेलों का प्रांतीयकरण भी किया है। इसमें अयोध्या में लगने वाला मकर संक्रांति एवं बसंत पंचमी, बुलंदशहर के अनूप शहर में लगने वाला कार्तिक पूर्णिमा, गंगा स्नान मेला और हाथरस में आयोजित होने वाला लख्खी मेला श्री दाऊजी महराज। दीपावली के एक दिन पहले अयोध्या में आयोजित दीपोत्सव योगी सरकार की अपनी पहल है। इसका अयोध्या की ब्रांडिंग में अच्छी खासी मदद मिली है।

# अब पात्र परिवारों को घर बैठे मिलेगा पारिवारिक लाभ, सीएम योगी की पहल से बदली व्यवस्था

## पारदर्शी पोर्टल से मिल रही तेजी से मदद, आवेदन से लेकर भुगतान तक पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**लखनऊ।** मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश की गरीब एवं असहाय परिवारों को राहत पहुंचाने वाली राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना को अब और अधिक पारदर्शी, तेज और जनता के अनुकूल बना दिया गया है। अब पात्र परिवारों को योजना के तहत मिलने वाली आर्थिक सहायता के लिए महीनों चक्कर काटने की जरूरत नहीं पड़ेगी। आवेदन से लेकर भुगतान तक की पूरी प्रक्रिया इंटरनेट आधारित कर दी गई है और हर कदम पर जवाबदेही तय की गई है। इस नई व्यवस्था के तहत पात्र आवेदकों को अब आवेदन की तारीख से 75 दिनों के भीतर सहायता राशि उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया गया है। यदि किसी कारणवश यह समय सीमा पार होती है, तो अब मामले को लंबी प्रक्रिया में उलझाने की बजाय जिला स्तर पर ही समिति से अनुमोदन लेकर तुरंत भुगतान किया जाएगा। यानी अब जरूरतमंदों को देरी के लिए प्रदेश स्तर की मंजूरी का इंतजार नहीं करना होगा। यह बदलाव उन परिवारों के लिए राहत लेकर आया है, जो समय पर सहायता की प्रतीक्षा में थे। योजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए जिला समाज कल्याण अधिकारियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है। वे यह सुनिश्चित करेंगे कि किसी भी आवेदक को पहले सहायता नहीं मिली हो। सत्यापन के बाद पात्र लाभार्थियों की अंतिम सूची तैयार कर 7 दिनों के भीतर स्वीकृति समिति के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी। इसके बाद सूची को डिजिटल सिग्नेचर के साथ पोर्टल पर अपलोड किया जाएगा और सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) के जरिए आधार लिंक बैंक खाते में धनराशि हस्तांतरित होगी। बजट की कमी होने पर भी जिलाधिकारी ट्रेजरी नियमों के तहत धनराशि निकालकर भुगतान सुनिश्चित कर सकते हैं, जिससे लाभार्थियों को लाभ मिलने में देरी न हो।

योगी सरकार ने योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार करने पर भी जोर दिया है। तहसील दिवसों में लाभार्थियों की सूची और पात्रता की शर्तों को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया जाएगा। होर्डिंग, पोस्टर और हैंडबिल के जरिए भी लोगों तक जानकारी पहुंचाई जाएगी, ताकि ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंद इस योजना का लाभ उठा सकें। योजना को लेकर तकनीकी स्तर पर भी सुधार किए जा रहे हैं। योगी सरकार इस योजना में तकनीकी सुधार भी कर रही है। जैसे छात्रवृत्ति योजनाओं में आधार से सीडिंग की पुष्टि की जाती है, उसी तरह अब पारिवारिक लाभ योजना में भी आधार आधारित स्टेटस चेकिंग के माध्यम से लाइव वेरिफिकेशन की सुविधा जल्द शुरू की जाएगी, जिससे खाते की स्थिति तुरंत स्पष्ट हो सके। योगी सरकार का लक्ष्य है कि हर जरूरतमंद तक सहायता पहुंचे और उनकी जिंदगी आसान बने।

### त्वरित सहायता और शिकायत निवारण की व्यवस्था

आकस्मिक परिस्थितियों में तत्काल सहायता के लिए भी विशेष प्रावधान किए गए हैं ।जिला समाज कल्याण अधिकारी और जिलाधिकारी डिजिटल सिग्नेचर के जरिए आवेदन सत्यापित करेंगे और स्वीकृति के बाद तुरंत भुगतान होगा। योजना से जुड़ी किसी भी समस्या के समाधान के लिए मुख्यालय स्तर पर कमांड सेंटर में हेल्पलाइन नंबर 14568 शुरू किया गया है, जहां लाभार्थी अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

# योगी का मिशन 2026-31: 1.29 लाख करोड़ से यूपी के शहरों के कायाकल्प की तैयारी

## इंटीग्रेटेड रोड नेटवर्क और ड्रेनेज सिस्टम को सुधारने के लिए 50 हजार करोड़ से अधिक के मेगा प्रोजेक्ट पर होगा काम

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**लखनऊ।** मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में राज्य ह्यउत्तम प्रदेशह्न के अपने संकल्प को साकार करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। योगी सरकार ने शहरी क्षेत्रों के कायाकल्प के लिए 2026 से 2031 तक 1.29 लाख करोड़ की महत्वाकांक्षी योजना तैयार की है, जो शहरों को आधुनिक, स्वच्छ, सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल बनाने का एक भव्य विजन प्रस्तुत करती है। हाल ही में केंद्रीय वित्त आयोग के समक्ष योगी सरकार ने प्रदेश में 2026 से 2031 तक किये जाने वाले विकास कार्यों का रोडमैप प्रस्तुत किया है। इस योजना में न केवल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और शहरी जीवन की गुणवत्ता को ऊपर उठाने पर विशेष जोर है, बल्कि सामाजिक कल्याण और तकनीकी नवाचार को भी प्राथमिकता दी गई है। योगी सरकार का यह प्रयास उत्तर प्रदेश को भारत के सबसे विकसित और समृद्ध शहरी केंद्रों में शुमार करने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

#### प्रदेश को पर्यावरण संरक्षण में मॉडल राज्य बनाने का लक्ष्य

पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति योगी सरकार की प्रतिबद्धता के लिए इस योजना में 1,265 करोड़ की शहरी हरियाली और बागवानी परियोजनाएं और 990 करोड़ की इलेक्ट्रिक श्मशान घाट योजनाएं शामिल हैं। ये पहल शहरों को हरा-भरा और पर्यावरण के अनुकूल बनाएंगी, साथ ही प्रदूषण को कम करने में मदद करेंगी। इसके अलावा 17 नगर निगमों और 3 एनसीआर शहरों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए 3,120 करोड़ का निवेश शहरी नागरिकों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने वाला साबित होगा।

योगी सरकार की ये योजनाएं न केवल शहरी सौंदर्य को बढ़ाएंगी, बल्कि उत्तर प्रदेश को पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक मॉडल राज्य के रूप में स्थापित करेंगी। शहरी जीवन को समृद्ध और सुरक्षित बनाने के लिए योगी सरकार ने सामाजिक और तकनीकी नवाचारों पर भी विशेष ध्यान दिया है। डिजिटल लाइब्रेरी के लिए 1,490 करोड़ का निवेश युवाओं को आधुनिक शिक्षा और ज्ञान के नए अवसर प्रदान करेगा, जबकि 1,400 करोड़ की स्मार्ट पालिका परियोजना शहरी प्रशासन को और अधिक पारदर्शी और कुशल बनाएगी।

### शहरी क्षेत्रों में एकीकृत सड़क नेटवर्क के विकास पर विशेष फोकस

योगी सरकार के रोडमैप का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा शहरी क्षेत्रों में एकीकृत सड़क नेटवर्क का विकास है, जिसके लिए 30,000 करोड़ का निवेश प्रस्तावित है। यह परियोजना शहरों के भीतर यातायात को सुगम बनाएगी और शहरी व उप-शहरी क्षेत्रों को आपस में जोड़कर आर्थिक गतिविधियों को नई गति देगी। इसके साथ ही, 27,500 करोड़ की स्टॉर्म वाटर ड्रेनेज योजना शहरी बाढ़ को रोकने और जल प्रबंधन को बेहतर बनाने में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी। स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए 15,000 करोड़ की सीवरेज और सेप्टेज प्रबंधन परियोजना, साथ ही इसके संचालन और रखरखाव के लिए 5,387 करोड़, शहरों को स्वच्छ और स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। पेयजल आपूर्ति के लिए 9,900 करोड़ और इसके रखरखाव के लिए 8,286 करोड़ की योजनाएं हर घर तक शुद्ध पानी की पहुंच सुनिश्चित करेंगी। योगी आदित्यनाथ का यह विजन शहरी उत्तर प्रदेश को एक ऐसी जगह बनाने का है, जहां आधुनिक सुविधाएं और पर्यावरणीय संतुलन एक साथ फलें-फूलें।

# योगी सरकार में लगभग दोगुनी हुई अभिजनक बीज नर्सरी की संख्या

## 2016-17 में 150 की तुलना में 2024-25 में चीनी मिलों के प्रक्षेत्र का उपयोग करते हुए 267 हुई बीज नर्सरी की संख्या

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश में गन्ना किसानों को मजबूत आधार देने की दिशा में योगी सरकार ने एक नई मिसाल कायम की है।

प्रदेश में अभिजनक बीज नर्सरी की संख्या लगभग दोगुनी हो गई है। वर्ष 2016-17 में जहां केवल 150 बीज नर्सरियों का संचालन हो रहा था, वहीं 2024-25 में यह संख्या बढ़कर 267 तक पहुंच गई है। यह वृद्धि प्रदेश की चीनी मिलों के प्रक्षेत्र का प्रभावी उपयोग कर संभव हुई है। इतना ही नहीं, वर्ष 2024-25 में प्रदेश में 4.4 करोड़ नवीन किस्मों के सिंगल बड का वितरण किया गया है, जो कि देश में किसी भी शोध संस्था द्वारा उत्पादित बीजों की तुलना में सर्वाधिक है। इस वितरण से गन्ना उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है। बीज उत्पादन और वितरण में इस प्रगति ने उत्तर प्रदेश को गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी बना दिया है।

### वैज्ञानिक निरीक्षण और त्रिस्तरीय प्रमाणन प्रक्रिया

बीजों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए त्रिस्तरीय बीज उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत अभिजनक बीजों (Breeder SXeed) का प्रमाणन वैज्ञानिक टीम द्वारा किया जाता है। बीज उत्पादकता के निरीक्षण का विस्तृत शेड्यूल निर्धारित किया गया है। इसके अनुसार, बुवाई के समय, अंकुरण के बाद (45-60 दिन), टिल्लरिंग अवस्था में (100-120 दिन), मिल योग्य गन्ने के निर्माण की अवस्था में (180-200 दिन) और कटाई से 15-20 दिन पूर्व निरीक्षण किया जाता है। इस वैज्ञानिक और व्यवस्थित प्रक्रिया के चलते किसानों को प्रमाणित, गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध हो रहे हैं, जिससे उत्पादन क्षमता में निरंतर सुधार हो रहा है।

# मिसाल बन रही सीएम युवा योजना, पढ़े-लिखे योग्य युवाओं के दरवाजे खुद पहुंच रही योगी सरकार

## योग्य युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए यूनिवर्सिटी, कॉलेज और अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों में चलेगा अभियान

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

- पढ़े-लिखे युवाओं को खोजने के लिए अधिकारियों की टीम करेगी दौरा, युवाओं को चिह्नित कर योजना का दिया जाएगा लाभ
- युवाओं को स्वरोजगार स्थापित करने के लिए बिना ब्याज और बिना गारंटी के 5 लाख रुपए तक का मिल सकेगा लोन

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश सरकार की सीएम युवा योजना अब सिर्फ योजना नहीं, बल्कि स्वरोजगार की नई क्रांति बनकर उभर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुसार, इस योजना के अंतर्गत अब सरकार स्वयं योग्य और शिक्षित युवाओं को खोजकर उन्हें 5 लाख रुपये तक का ऋण देकर आत्मनिर्भर बनाने जा रही है। इस योजना के तहत विशेष अभियान चलाकर प्रत्येक जनपद में अधिकारियों की टीम विश्वविद्यालयों, इंजीनियरिंग कॉलेजों और अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों में जाकर ऐसे युवाओं को चिन्हित करेगी जो या तो ग्रेजुएशन के अंतिम वर्ष में हैं या पढ़ाई पूरी करने के बाद भी बेरोजगार हैं। उन्हें चिह्नित कर योजना के तहत 5 लाख रुपए तक का लोन बिना ब्याज और बिना गारंटी उपलब्ध कराया जाएगा, ताकि वो स्वरोजगार से जुड़कर दूसरों के लिए भी रोजगार का प्रबंध कर सकें। सीएम युवा योजना के नोडल अधिकारी ज्वॉइंट कमिश्नर इंडस्ट्रीज सर्वेश्वर शुक्ला के अनुसार योगी सरकार का मुख्य उद्देश्य है कि इस योजना से सभी योग्य, शिक्षित और प्रगतिशील सोच वाले युवाओं को जोड़ा जाए ताकि वे खुद का व्यवसाय स्थापित कर न केवल खुद को बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे सकें। सरकार चाहती है कि युवाओं को 'बेरोजगार' की जगह 'स्वरोजगार' के रास्ते पर लाया जाए। योजनाओं के तहत संबंधित ट्रेड में उन्हें 5 लाख रुपए तक का लोन और तकनीकी मार्गदर्शन दिया जाएगा, जिससे उनका स्टार्टअप या व्यवसाय सफल हो सके। इसके लिए इसी माह से टीमें गठित कर सभी 75 जनपदों में अभियान चलाया जाएगा। यूनिवर्सिटीज, डिग्री कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज समेत उच्च शिक्षण संस्थाओं में ऐसे युवाओं की तलाश होगी जो अपने प्रोजेक्ट को धरातल पर उतारने के लिए आर्थिक मदद की तलाश में हों। ऐसे युवाओं को प्रोत्साहित कर उन्हें बिना ब्याज और बिना गारंटी के 5 लाख तक का लोन उपलब्ध कराया जाएगा।

#### अभियान को गति देने के लिए अधिकारियों को मिल रही विशेष ट्रेनिंग

सीएम योगी के विजन के अनुरूप प्रदेश के युवाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए शुरू की गई इस योजना को और गति देने के लिए अधिकारियों को भी विशेष ट्रेनिंग दी जा रही है। इसके तहत, निर्यात भवन लखनऊ में दो दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया गया है, जिसमें कैपेसिटी बिल्डिंग पर जोर दिया जा रहा है। इस कार्यशाला में अधिकारियों को सीएम युवा पोर्टल को और अधिक यूजर फ्रेंडली और उपयोगी बनाने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है।

# योगी सरकार ने किया कमाल, 76 सेतु परियोजनाओं को पूरा करने में लगा सिर्फ साल

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

- सीएम योगी के निर्देशानुसार वित्तीय वर्ष 2024-25 में सर्वाधिक 76 सेतु परियोजनाएं पूर्ण

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश को उत्तम कनेक्टिविटी युक्त प्रदेश बनाने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार नए प्रतिमान गढ़ रही है। सीएम योगी के विजन का असर है कि प्रदेश में मात्र एक साल में 76 सेतु परियोजनाओं का निर्माण उच्च गुणवत्ता को सुनिश्चित करते हुए पूरा कर लिया गया है। लोकनिर्माण विभाग के अंतर्गत उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम लिमिटेड ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में इस उपलब्धि को हासिल किया है जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। आंकड़ों के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2024-25 में उ.प्र राज्य सेतु निगम लिमिटेड द्वारा जिन 76 सेतु परियोजनाओं को रिकॉर्ड समय में पूरा किया गया उनमें 43 नदी सेतु, 28 आरओबी व 5 फ्लाईओवर शामिल हैं। खास बात यह है कि यह उपलब्धियां केवल एक वर्ष की अवधि तक सीमित नहीं है। सीएम योगी के अब तक के कार्यकाल में हुए निर्माण कार्य प्रदेश की भविष्य की जरूरतों अनुसार उत्तम कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने में मील का पत्थर साबित हुए हैं। आंकड़ों के अनुसार, पिछले 8 वर्षों में सीएम योगी के निर्देश व मार्गदर्शन में उ.प्र राज्य सेतु निगम लिमिटेड ने कुल 471 सेतु परियोजनाओं के उच्च गुणवत्तापूर्ण निर्माण में सफलता प्राप्त की है। इसमें 313 नदी सेतु, 143 आरओबी तथा 15 फ्लाइओवर शामिल हैं।

#### 2.5 गुना बढ़ा टर्नओवर

लोकनिर्माण विभाग द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के अनुसार, उ.प्र राज्य सेतु निगम लिमिटेड के टर्नओवर में भी सीएम योगी के अब तक के कार्यकाल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। एक ओर, वित्तीय वर्ष 2017-18 में जहां कुल टर्नओवर 1013.74 करोड़ था, वहीं वित्तीय वर्ष 2018-19 में यह बढ़कर 1360.34 करोड़ पहुंच गया। वित्तीय वर्ष 2019-20, 2020-21 तथा 2021-22 में भी वृद्धि दर्ज करते हुए टर्नओवर क्रमशः 1511.18 करोड़, 1936.92 करोड़ तथा 1959.33 करोड़ रहा।

सेहत/स्वास्थ्य

# क्या आम खाने से बढ़ता है पिंपल्स-छाले का खतरा, जानिए इसे खाने का सही तरीका

**अनन्या मिश्रा**

गर्मियों के मौसम में 'फलों का राजा' आम आने लगता है। आम खाना लगभग हर किसी को पसंद होता है। क्योंकि यह रसीला फल न सिर्फ स्वाद में अच्छा होता है, बल्कि यह पोषण से भी भरपूर होता है। आम में विटामिन सी, पोटेशियम, मैग्नीशियम और फाइबर जैसे जरूरी तत्व पाए जाते हैं। जोकि स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद माने जाते हैं। लेकिन कुछ लोग 2-3 आम खाने के बाद या लगातार कुछ दिन आम खाते हैं, तो उनके फेस पर पिंपल्स यानी की मुंहासे निकल आते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि क्या वाकई आम खाने से स्किन को नुकसांन पहुंच सकता है।

## आम खाने से मुंहासे निकलना

हालांकि इस बाद का कोई साइंटिफिक प्रूफ नहीं है, जो यह साबित करे कि आम खाने से पिंपल्स की समस्या होती है। लेकिन कुछ कारणों की वजह से आम खाने से स्किन पर पिंपल्स हो सकते हैं।

## पिंपल्स निकलने का कारण

बता दें कि आम के छिलके और रस में 5-रेसोर्सिनॉल नामक केमिकल पाया जाता है। जोकि स्किन पर लगने से पिंपल्स जैसे निशान बना सकता है। वहीं यह मुंह में जाने पर स्टोमेटाइटिस यानी की जलन और छोटे-छोटे घाव हो सकते हैं।

## हाई ग्लाइसेमिक इंडेक्स

आम का GI लेवल ज्यादा होता है। जिससे शुगर और इंसुलिन लेवल तेजी से बढ़ता है।
आम खाने से सीबम का प्रोडक्शन बढ़ जाता है।
इससे स्किन पोर्स ब्लॉक हो जाते हैं, जोकि मुहांसे का कारण बन सकते हैं।

## केमिकल से पके आम

कैल्शियम कार्बाइड से पकाए गए आम खाने से एसिटिलीन गैस बनती है। इस गैस की वजह से मुंह में छाले या फिर जलन की समस्या हो सकती है। वहीं अगर किसी व्यक्ति में विटामिन की कमी है, तो आम खाने से मुंह में छाले हो सकते हैं।

## किन लोगों को नहीं खाना चाहिए आम

डायबिटीज के मरीज
मोटापे से जूझ रहे लोगों को
पाचन संबंधी समस्याओं से पीड़ित लोगों को
स्किन एलर्जी वाले लोगों को
किडनी मरीजों को
4 साल से कम उम्र के बच्चों को
किन चीजों के साथ न खाएं आम
अगर आप खट्टे फलों के साथ आम का सेवन करते हैं, तो आपके पाचन में गड़बड़ी हो सकती है।

मसालेदार खाने के साथ आम का सेवन नहीं करना चाहिए।
दही के साथ भी आम का सेवन नहीं करना चाहिए।
शराब आदि के साथ आम नहीं खाना चाहिए।
आम खाने के बाद ठंडा पानी नहीं पीना चाहिए।

## पानी में भिगाएं आम

आम खाने से पहले हमेशा इसको 2-3 घंटे ताजे पानी में भिगोकर रखना चाहिए। इससे इसमें मौजूद फाइटिक एसिड और कीटनाशक हट जाते हैं। यह न्यूट्रिएंट्स के अवशोषण और पाचन में बाधा बन सकते हैं।

## ठंडा आम न खाएं

फ्रिज से निकालकर फौरन ठंडा आम खाने से बचना चाहिए। इससे गले में खराश या पाचन तंत्र बिगड़ सकता है। इसे सामान्य तापमान में कुछ देर के लिए रखना चाहिए।

## खाली पेट न खाएं

कभी भी खाली पेट आम नहीं खाना चाहिए। क्योंकि इससे आपको एसिडिटी हो सकती है। इसलिए कुछ खाने के बाद ही इसको खाना बेहतर है।

## शुद्ध और पका आम खाएं

मार्केट से आम खरीदने के दौरान ध्यान रखें कि वह कार्बाइड से पका हुआ न हो। क्योंकि ऐसा आम खाने से आपके शरीर से नुकसान पहुंच सकता है।

## पानी में भिगोकर आम खाना फायदेमंद

आम में फाइटिक एसिड पाया जाता है, जो एक एंटी-न्यूट्रिएंट होता है। यह शरीर में जरूरी न्यूट्रिएंट्स जैसे कैल्शियम, आयरन को अच्छे से एब्जॉर्ब नहीं होने देता है। वहीं जब आप 2-3 घंटे पानी में भिगोते हैं, तो इससे फाइटिक एसिड कम हो जाता है। वहीं शरीर को भी आम से मिलने वाले न्यूट्रिएंट्स अच्छे से मिलते हैं। आम में मौजूद फाइटोकेमिकल्स भी कम हो जाते हैं। जिससे नेचुरल फैट बस्टर की तरह काम करता है। वहीं आम को भिगोने से इस पर लगे कीटनाशक, धूल-मिट्टी और गंदगी भी हट जाती है। जिससे बीमारियों का खतरा कम हो जाता है।

## रोजाना कितने आम खाएं

यह आपके स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। आमतौर पर रोजाना एक मध्यम आकार का आम खाना सबसे बेहतर है। इससे जरूरी न्यूट्रिएंट्स मिलते हैं। इससे ब्लड शुगर लेवल संतुलित रहता है और इससे मुंहासों या शुगर स्पाइक्स का खतरा कम होता है।

## कैसे ठीक करें पिंपल्स

अगर आम खाने से पिंपल्स की समस्या होती है, तो ऐसी स्थिति में आम कम मात्रा में खाना चाहिए। खासकर अगर आपकी त्वचा मुंहासों के प्रति सेंसिटिव है, तो खूब पानी पिएं, बैलेंस्ड डाइट लें और हाई ग्लाइसेमिक फूड्स से बचना चाहिए। फेस को साफ रखने के लिए जेंटल क्लींजर का इस्तेमाल करें और सूजन को कम करने का प्रयास करने की कोशिश करें।

पर्यटन

# भारत की विरासत को करीब से देखने के लिए जरूर घूमें बिहार की ये जगहें, टूरिस्ट की नहीं मिलेगी भीड़

> अगर आप भी भारत की विरासत को देखने और जानने में दिलचस्पी रखते हैं, तो आपको बिहार जरूर घूमना चाहिए। बिहार की प्राचीन भूमि सिर्फ साम्राज्यों और ज्ञानोदय की जन्मस्थली नहीं, बल्कि आपको यहां पर ऐसी चीजें देखने को मिलेंगी, जो सदियों से स्थापित हैं।

**अनन्या मिश्रा**

जब भी भारत में विरासत की बात की जाती है, तो सबसे पहले राजस्थान के किले और दिल्ली के फेमस स्मारकों की चर्चा सबसे ज्यादा होती है। लेकिन इन सबके बीच बिहार लोगों के दिमाग से निकल जाता है। अगर आप भी भारत की विरासत को देखने और जानने में दिलचस्पी रखते हैं, तो आपको बिहार जरूर घूमना चाहिए। बिहार की प्राचीन भूमि सिर्फ साम्राज्यों और ज्ञानोदय की जन्मस्थली नहीं, बल्कि आपको यहां पर ऐसी चीजें देखने को मिलेंगी, जो सदियों से स्थापित हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बिहार के उन विरासत स्थलों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनके बारे में काफी कम लोग जानते हैं।

## तेलहरा

तेलहरा बिहार में नालंदा जिले के एकंगरसराय प्रखंड का गांव है। यह प्राचीन भारत में एक बौद्ध मठ का स्थल हुआ करता था, जोकि पहली शताब्दी ईस्वी पूर्व का है। लेकिन इस जगह के बारे में भी बहुत कम लोगों को जानकारी है। भारत के इतिहास से जुड़ी कई चीजों को खोजने के लिए इस स्थान पर खुदाई चल रही है, ऐसे में आप भी यहां पर जा सकते हैं। इसके साथ ही बौद्ध मठ स्थल जाना न भूलें। यहां पर ध्यान कक्ष और प्रार्थना कक्ष में आपको काफी शांति मिलेगी।

## रोहतासगढ़ किला

रोहतास जिले में एक पहाड़ी की चोटी पर रोहतासगढ़ किला स्थित है। यह किला काफी प्राचीन है, जिस कारण इसको भूतिया भी कहा जाता है। रोहतासगढ़ किले का निर्माण शेरशाह शूरी ने कराया था। यह बेहद विशाल किला है और रहस्यमय चीजों से भरा हुआ है। हालांकि इस किले तक पहुंचने के लिए आपको थोड़ी मेहनत जरूर करनी पड़ेगी। इस किले तक पहुंचने वाली चढ़ाई आपको थका देगी। जिन लोगों को घूमने-फिरने और एडवेंचर का शौक है, उनके लिए यह जगह परफेक्ट है। आपको यहां पर अकेले जाने की सलाह नहीं दी जाती है, क्योंकि स्थानीय लोग यहां पर भूत-प्रेत होने का दावा करते हैं।

## केसरिया स्तूप

बिहार में मौजूद केसरिया स्तूप के बारे में काफी कम लोग जानते हैं। यह स्तूप 10 मंजिला अपार्टमेंट बिल्डिंग से भी ज्यादा ऊंचा है। 104 फीट ऊंचे इस स्तूप को दुनिया के सबसे बड़े बौद्ध स्तूपों में से एक है। अगर आप भारत के विरासत स्थलों को देखने में दिलचस्पी रखते हैं, तो आपको यहां पर जरूर आना चाहिए। यहां पर आपको भीड़ भी नहीं मिलेगी, लेकिन आपको यहां पर गहरी आध्यात्मिक शांति जरूर मिलेगी, जोकि अन्य फेमस स्थानों पर नहीं मिल सकती है।

## विक्रमशिला

बता दें कि विक्रमशिला महाविहार भारत का एक फेमस शिक्षा-केंद्र था। यह प्राचीन भारत के शीर्ष बौद्ध विश्वविद्यालयों में से एक था। हालांकि अब यह विश्वविद्यालय सिर्फ एक खंडहर के रूप में दिखाई देता है। वहीं कुछ समय पहले पीएम मोदी ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय के उद्धार की बात की थी। ऐसे में अगर आप प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय देखने के इच्छुक हैं, तो आप यहां पर आ सकते हैं।

ब्यूटी / फैशन

# सिर्फ 5 रुपए की इस चीज से पसीने की बदबू होगी छूमंतर, स्किन भी करेगी शाइन

**अनन्या मिश्रा**

गर्मियों में पसीने की समस्या का लगभग सभी को सामना करना पड़ता है। किसी-किसी को इतना ज्यादा पसीना आता है कि पूरे समय कपड़े पसीने से भीगे रहते हैं। ऐसे में पसीने के कारण शरीर से बदबू आना लाजमी है। शरीर से पसीने की बदबू आने से असहज लगता है। हालांकि मार्केट में बहुत सारे अच्छे परफ्यूम आते हैं, जो लंबे समय तक चलते हैं। लेकिन इनसे शरीर की बदबू नहीं जाती है। हालांकि परफ्यूम के कारण कपड़ों से अच्छी महक जरूर आने लग जाती है। अगर आप चाहते हैं कि शरीर से पसीना कम आए और पसीने की बदबू भी कंट्रोल में रहे। तो इसके लिए आप नींबू का इस्तेमाल कर सकती हैं। नींबू एरोमैटिक होता है और इसकी महक काफी डॉमिनेटिंग होती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि नींबू का कैसे इस्तेमाल करना है। जिससे शरीर की गंध को कम किया जा सके।

## नींबू का जेल

बता दें कि घर पर नींबू का जेल तैयार करना बहुत आसान है। नींबू का जेल तैयार करने के लिए आपको बस मुट्ठीभर नींबू के छिलकों की जरूरत होगी।

> *अगर आप चाहते हैं कि शरीर से पसीना कम आए और पसीने की बदबू भी कंट्रोल में रहे। तो इसके लिए आप नींबू का इस्तेमाल कर सकती हैं। नींबू एरोमैटिक होता है और इसकी महक काफी डॉमिनेटिंग होती है। ऐसे में आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि नींबू का कैसे इस्तेमाल करना है।*

## सामग्री

नींबू के छिलके- 20 से 25
गुलाब जल- 1 बड़ा चम्मच
विटामिन-ई कैप्सूल- 1

## विधि

सबसे पहले एक बाउल में पानी लें और उसमें नींबू का छिलका डालें। इसको तब तक उबालें, जब तक नींबू के छिलके जेल जैसे न लगने लगें। अब इस मिश्रण में विटामिन ई कैप्सूल और गुलाबजल डालें। फिर इसको एक शीशी में भरें। वहीं जब आप नहाने जाएं, तो इससे पहले 1 घंटे पहले इस मिश्रण को शरीर के उन हिस्सों पर लगाएं, जहां पर सबसे ज्यादा पसीना आता है। फिर थोड़ी देर बाद पानी से नहा लें। अगर आप रोजाना ऐसा करती हैं, तो कुछ ही दिनों में आपको रिजल्ट्स देखने को मिलेंगे।

## नहाने के पानी में डालें नींबू का रस

नींबू के रस को पानी में डालकर रोजाना नहाने से आपको शरीर से निकलने वाला एक्स्ट्रा ऑयल कंट्रोल होगा। साथ ही इससे शरीर से आने वाली बदबू भी दूर होगी।

इससे आपकी स्किन में ग्लो आएगा और स्किन शाइन करेगी। इस बात का ध्यान रखें कि अगर आपकी बॉडी में किसी तरह का इंफेक्शन है, या फिर किसी तरह का शरीर का घाव है, तो आपको नींबू का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

घरेलू नुस्खे

# बिना मेहनत के आसानी से निकल जाएगी नारियल की गिरी, बस फॉलो करें ये ट्रिक्स

> *कच्चे नारियल के छिलके को हटाने से लेकर उसका शेल और उससे गिरी को अलग करना मुश्किल होता है। ऐसे में आज हम आपको कुछ ऐसे ट्रिक्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको फॉलो करने से आप बिना चाकू और मेहनत के नारियल से गिरी निकाल सकती हैं।*

**अनन्या मिश्रा**

नारियल की मीठी गिरी और उसका पानी बहुत स्वादिष्ट लगता है। वहीं नारियल की गिरी का इस्तेमाल हम बहुत सी डिशेज को बनाने में करते हैं। वहीं पूजा-पाठ में भी नारियल और इसके शैल का इस्तेमाल किया जाता है। वहीं नारियल के खोल से लेकर इसकी गिरी सभी चीज जरूरत की होती है। बता दें कि नारियल की गिरी ठंडी होती है। वहीं गर्मियों में भी इसका सेवन करना फायदेमंद होता है। नारियल खाने में बहुत टेस्टी लगता है, लेकिन जब नारियल से गिरी निकालने की बात होती है, तो यह बहुत मेहनत का काम लगता है।

कच्चे नारियल के छिलके को हटाने से लेकर उसका शेल और उससे गिरी को अलग करना मुश्किल होता है। जिसके कारण कई बार हम मार्केट से छिला हुआ नारियल ले आते हैं। जिससे कि छीलने के झंझट से बचा जा सके। क्योंकि नारियल का खोल काफी सख्त होता है। ऐसे में इसकी गिरी को निकालने के लिए भारी और नुकीली चीजों की मदद लेना पड़ता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे ट्रिक्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको फॉलो करने से आप बिना चाकू और मेहनत के नारियल से गिरी निकाल सकती हैं।

## नारियल की गिरी को खोल से ऐसे करें अलग

सबसे पहले फ्रीजर में साबुत नारियल को करीब 15 मिनट के लिए रखें।

अब फ्रीजर से नारियल को बाहर निकाल लें।

फिर नारियल को दो भागों में तोड़ लें।

अब किसी नुकीली चीज की मदद से नारियल के किनारे पर गोल पूरा घुमा दें।

इसके बाद नारियल को धीरे-धीरे जमीन पर पटकें। इससे नारियल की पूरी गिरी बाहर आसानी से निकल जाएगी।

## दूसरा तरीका

एक बर्तन में पानी को अच्छे से खूब गर्म करना है।

फिर एक साबुत नारियल को गर्म पानी में डालकर करीब 10 मिनट के लिए छोड़ दें।

अब आप हैमर की सहायता से नारियल को तोड़ें।

फिर किसी नुकीले स्टील के गिलास की मदद से गिरी निकालें।

इस तरीके से गिरी आसानी से निकल जाएगी।

## अन्य टिप्स

सबसे पहले नारियल को दो भाग में तोड़कर एक भाग को कपड़े में उल्टा करके किसी भारी चीज से मारें। इससे गिरी बाहर निकल आएगी।

वहीं आप नारियल के खोल को बर्फ के ठंडे पानी में भी कुछ देर के लिए रख सकती हैं। नारियल की गिरी को आसानी से निकालने के लिए इसके ऊपरी किनारों पर किसी भारी चीज से मारें। इस तरह से गिरी चाकू की मदद से बाहर निकल आएगी।

# कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा ने मोदी कॉलेज के छात्र को टैबलेट और 21000 रुपए नगद व प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**मोदीनगर।** डॉक्टर के एन मोदी साइंस एंड कॉमर्स कॉलेज मोदीनगर गाजियाबाद के हाईस्कूल के छात्र वंश शर्मा पुत्र जगदेव शर्मा ने 600 में से 560 अंक पाकर जनपद में तीसरा स्थान प्राप्त करने पर उत्तर प्रदेश में कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल और जनपद के जिलाधिकारी दीपक मीणा आई ए एस तथा मुख्य विकास अधिकारी आई ए एस तथा जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ धर्मेंद्र शर्मा ने छात्र को एक- टैबलेट 21000 रुपए नगद तथा प्रशस्ति पत्र और मेडल पहनाकर सम्मानित किया साथ ही साथ जिलाधिकारी ने विद्यालय के प्रधानाचार्य एस सी अग्रवाल को बहुत बधाइयां और शुभकामनाएं दी साथी उन्होंने यह प्रेरणा भी दी की आने वाले वर्षों में विद्यालय के छात्र और अधिक ऊर्जा के साथ इसी प्रकार मेहनत करते रहें ताकि विद्यालय के छात्र प्रदेश स्तर पर अपना स्थान प्राप्त कर विद्यालय एवं अपने शहर के साथ-साथ माता-पिता जनपद का नाम भी प्रदेश स्तर पर रोशन करने के लिए प्रेरित किया विद्यालय के अध्यक्ष प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉक्टर डीके मोदी उपाध्यक्ष कैप्टन राजीव सक्सेना व प्रबंधक संदीप कुमार यादव ने छात्र को बधाई दी और उन्होंने भी छात्रों को भविष्य में प्रदेश स्तर पर स्थान बनाने के लिए प्रेरित किया विद्यालय के सभी शिक्षकों ने भी उन्हें बधाई दी उल्लेखनीय है कि इस विद्यालय के छात्र बोर्ड परीक्षा के साथ-साथ खेल, एनसीसी स्काउट, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, भारत को जानो प्रतियोगिता ,कला उत्सव विज्ञान प्रदर्शनी, राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस और अन्य सभी गतिविधियों में जनपद ही नहीं बल्कि प्रदेश स्तर के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रति भाग कर विद्यालय के साथ-साथ जनपद का नाम रोशन कर रहे हैं।

इस वर्ष विद्यालय के 2 छात्रों का चयन राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस मैं राष्ट्रीय स्तर के लिये हुआ है विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉक्टर सतीश चंद्र अग्रवाल और वरिष्ठ प्रवक्ता और प्रशासनिक अधिकारी राजकुमार सिंह ने भी इस सम्मान समारोह में उपस्थित थे विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉक्टर सतीश चंद्र अग्रवाल ने बताया कि विद्यालय के छात्र पिछले कई वर्षों से जनपद में स्थान बना रहे हैं यह भी उल्लेखनीय है कि हाई स्कूल का परीक्षा फल 96 प्रतिशत और इंटर का 92 प्रतिशत रहा है जबकि दोनों परीक्षाओं मे 1600 छात्रों ने परीक्षा दी थी।

# सांसद ने निष्काम भवन में किया पेशेंट बेड, व्हीलचेयर व ऑक्सीजन कंसंट्रेटर का उद्घाटन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**मोदीनगर।** बागपत संसदीय क्षेत्र से लोकसभा सांसद डॉ. राज कुमार सांगवान निष्काम भवन में प्रथम बार आगमन हुआ। इस विशेष अवसर पर निष्काम संस्था के मुख्य संरक्षक चानन लाल ढींगरा, संरक्षक दिलीप शर्मा, अध्यक्ष जसमीत सिंह सहित निष्काम संस्था के सभी सदस्यों ने उनका स्वागत किया। इस दौरान मोदीनगर नगर पालिकाध्यक्ष विनोद वैशाली भी साथ में उपस्थित रहे। अपने निष्काम भवन के दौरे के दौरान सांसद महोदय ने निष्काम द्वारा संचालित विभिन्न मेडिकल सेवाओं का निकट से निरीक्षण किया और उनकी कार्यप्रणाली की विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की।

निष्काम संस्था द्वारा हाल ही में अपने बेड़े में बढ़ाए गए नए पेशेंट बेड, नई व्हीलचेयर, नए ऑक्सीजन कंसंट्रेटर का सांसद डॉ. सांगवान ने फीता काटकर मानवता की सेवाओं हेतु समर्पित किए। निष्काम के मुख्य संरक्षक चानन लाल ढींगरा और संरक्षक दिलीप शर्मा ने सांसद को निष्काम भवन का अवलोकन कराया तथा उन्हें मरीजों के कठिन वक्त में दी जाने वाली तमाम सेवाओं की जानकारी दी। सांसद ने निष्काम की कार्यशैली तथा व्यवस्थाओं की दिल खोलकर सराहना की।

सांसद ने मरीजों को लेकर निष्काम भवन में प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार को होने वाली देह आरोग्यता अरदास को अनूठी मिसाल बताया तथा समाज के प्रत्येक वर्ग को निष्काम संस्था से प्रेरणा लेने को कहा।

नगरपालिका अध्यक्ष विनोद वैशाली नें भी सासंद को निष्काम के पूर्व के इतिहास से अवगत कराते हुए निष्काम संस्था के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर निष्काम के संरक्षक दिलीप शर्मा ने सांसद को अवगत कराया कि निष्काम यह समस्त मेडिकल सेवाएं 24/7 समाज के लिए निःशुल्क रूप में प्रदान करता है जिसमें आने वाले वक्त में और भी इजाफा किया जाएगा। इस दौरान निष्काम के समस्त सदस्यों ने संयुक्त रूप से सांसद को निष्काम की तमाम सेवाओं को प्रदर्शित करता स्मृति चिन्ह भी भेंट किया।

इस अवसर पर चानन लाल ढींगरा, दिलीप शर्मा, जसमीत सिंह, जसप्रीत सिंह, मनजीत सिंह, राजेश खुराना, प्रेम कुमार चड्ढा, ज्ञानी रविन्द्र सिंह, अंशुल भसीन, सुनील भुटानी, पवन कुमार, जीतू सरदार , अनुप्रीत कौर, आशीष मेहंदी रत्ता, जसमिन्दर सिंह, सोनू धवन, हरसिमर सिंह, रविंद्र सिंह, सोहराब खान, सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

# एनसीसी कार्यालय में विधायक डॉ मंजू शिवाच व चेयरमैन विनोद वैशाली का हुआ भव्य स्वागत

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**मोदीनगर ।** मंगलवार को 35 यू पी वाहिनी एन सी सी मोदीनगर के कमान अधिकारी कर्नल पी के सिंह के नेतृत्व में वाहिनी के सम्पूर्ण स्टाफ द्वारा मोदीनगर विधायक डॉ मंजू शिवाच एवं चेयरमैन श्री विनोद वैशाली का भव्य स्वागत किया गया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में समस्त ए एन ओ ,जे सी ओ, पी आइ स्टाफ एवं सिविल स्टाफ का योगदान रहा।वाहिनी के कमान अधिकारी कर्नल पी के सिंह ने विधायक एवं चेयरमैन साहब को एन सी सी वाहिनी का मुआयना कराया तथा हापुड़ रोड स्थित रेलवे फाटक पर बन रहे पुल के कारण एन सी सी के कार्यालय में होने वाली असुविधाओं से अवगत कराते हुए उन्हें एन सी सी की संरचना, प्रशिक्षण एवं बुनियादी आवश्यकताओं की विस्तृत जानकारी दी।

विधायक डॉ मंजू शिवाच एवं चेयरमैन, नगर पालिका परिषद मोदीनगर ने रेलवे फाटक पर बनने वाले पुल से होने वाली असुविधाओं के कारण वाहिनी को हर स्तर पर सहयोग करने के लिए आश्वस्त किया। कमान अधिकारी कर्नल पी के सिंह ने बताया कि इस वाहिनी में मोदीनगर क्षेत्र के लगभग 1300 नवयुवक एन सी सी का प्रशिक्षण लेकर भारतीय सेनाओं में विभिन्न पदों को सुशोभित कर राष्ट्रीय सीमाओं और आंतरिक हिस्सों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कमान अधिकारी कर्नल पी के सिंह तथा संचालन मोदी कॉलेज के एन सी सी अधिकारी प्रवीण जैनर ने किया।

इससे पूर्व वाहिनी में पहुँचने पर विधायक डॉ मंजू सिवाच एवं चेयरमैन विनोद वैशाली का वाहिनी के ऑफि सर्स, सिविल स्टाफ एवं एन सी सी कैडेटस द्वारा गुलदस्ते, माला एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस अवसर पर वाहिनी के प्रशासनिक अधिकारी ले० कर्नल आर पी दहिया, कैप्टन रजनीश जिंदल,लै० ऑफि सर सुखविंदर तेवतिया, ऑफि सर गुड्डू कुमार ऑफि सर अनुराग, वाहिनी के आर्मी एवं सिविल स्टाफ के साथ एन सी सी कैडेटस भी उपस्थित रहे।

# ग्रीष्मावकाश में समर कैम्प का आयोजन कर सार्थक एवं रचनात्मक वातावरण का सजून किया गया

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**मोदीनगर।** विकास खण्ड भोजपुर में स्थित 42 उच्च प्राथमिक एवं कम्पोजिट विद्यालयों में प्रथम बार कक्षा 6 से 8 तक अध्ययनरत छात्रों हेतु दिनांक 21 मई 2025 से 10 जून 2025 के मध्य ग्रीष्मावकाश के दौरान परिषदीय विद्यालयों में पढने वाले, लगभग 2500 बच्चों विशेषकर ग्रामीण परिवेश में रहने वाले अधिकांश बच्चे जो अपने घरों में ही रहते है ऐसे बच्चों के लिए नए अनुभव की खोज करना, नए दोस्त बनाना ओर खेल-खेल में कुछ करके सीखने आदि ग्रीष्मावकाश में समर कैम्प का आयोजन कर सार्थक एवं रचनात्मक वातावरण का सजून किया गया।

समर कैम्प द्वारा एक संरचित ओर आकर्षक वातावरण प्रदान किया गया, समर कैम्प में बच्चो ने जीवन कौशल सीखा।

समर कैम्प के दौरान बच्चों ने विद्यालय में होने वाली नियमित पढाई से भिन्न रोचक गतिविधियों का आनन्द लिया तथा विभिन्न सामाजिक कौशलों का विकास कराया गया। प्रतिदिन बच्चों को योगासन कराकर स्वास्थ्य का महत्व बताया गया।

# प्राथमिक विद्यालय में समर कैंप का समापन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**मुरादनगर।** मुख्यमंत्री, अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा), एवं महानिदेशक स्कूल शिक्षा के निदेर्शानुसार तथा जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं खंड शिक्षा अधिकारी के मार्गदर्शन में विकास खंड मुरादनगर के 42 कंपोजिट एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में संचालित समर कैंप का आज समापन हो गया। इसी क्रम में कंपोजिट विद्यालय काकड़ा में आयोजित समर कैंप के दौरान छात्रों ने अपनी रचनात्मकता और प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया।

बच्चों द्वारा बैज निर्माण, गुलदस्ता सजावट, क्ले मॉडलिंग, विज्ञान मॉडल, पर्यावरण संरक्षण पर आधारित नाटिका, चित्र२कला, सांस्कृतिक एवं भाषाई पोस्टर निर्माण, पौधरोपण (एक पेड़ माँ के नाम), सिलाई-कढ़ाई, अचार बनाने की विधियाँ, नृत्य एवं कला आदि गतिविधियाँ आयोजित की गईं। समापन समारोह की अध्यक्षता कंपोजिट विद्यालय काकड़ा की प्रधानाध्यापिका पूनम त्यागी ने की। इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी जमुना प्रसाद, एस.आर.जी देवांकुर, एवं ए.आर.पी. मीनाक्षी यादव उपस्थित रहे।इस अवसर पर विद्यालय में आई.टी.एस. डेंटल कॉलेज के सहयोग से एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों एवं अभिभावकों को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया।

# डंपिंग ग्राउंड के विरोध में 22 जून को विशाल पंचायत, 16 गांवों के लोग होंगे शामिल

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

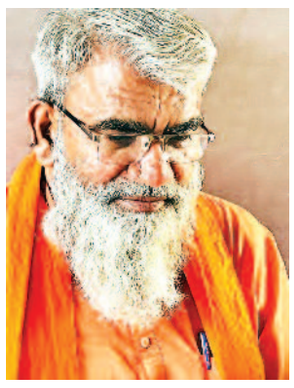

मुरादनगर। पाइपलाइन रोड पर डंपिंग ग्राउंड के विरोध में आगामी 22 जून को ग्राम शाहपुर में विशाल ग्रामीण किसान पंचायत का आयोजन किया जाएगा।

विकास संघर्ष समिति के सचिव सलेक भैया ने बताया कि क्षेत्र के 16 गांवों के लोग ग्राम भिक्कनपुर के निकट बनाए गए डंपिंग ग्राउंड को लेकर अत्यंत परेशान है। डंपिंग ग्राउंड हटाने को लेकर कई बार आंदोलन किया जा चुका है, लेकिन हर बार अधिकारियों द्वारा ग्रामवासियों को आश्वासन दिया जाता है। अधिकारियों के आश्वासन पर ही छः माह पूर्व ग्राम वासियों ने अपना आंदोलन स्थगित किया था लेकिन कोई कार्रवाई न होने के कारण ग्राम वासियों को फिर से आंदोलन के लिए विवश होना पड़ा है।

# जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा साक्षरता शिविर का आयोजन हुआ

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

**मोदीनगर।** जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव द्वारा तहसील मोदीनगर में सुनी गयी जन समस्याए। थानो में भी बैठेगें पैनल अधिवक्ता, कुमार मिताक्षर सचिव,अपर जिला जज गाजियाबाद।

महिलाओ व छात्राओं का हुआ उत्पीडन तो पुलिस करेगी प्राथमिकता दर्ज, संजय मुदगल पैनल अधिवक्ता। मोदीनगर- उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निर्देश पर जिला जज आशीष गर्ग अध्यक्ष जनपद न्यायधीश जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गाजियाबाद के नियंत्रण कुमार मिताक्षर सचिव,अपर जिला जज, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गाजियाबाद के आदेश की देख-रेख में तहसील मोदीनगर में साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का संचालन संजय मुदगल ने किया तथा शिविर की अध्यक्षता कुमार मिताक्षर सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गाजियाबाद के द्वारा किया गया जिसमे जनता की समस्याए सुनी गयी और अधिकारीयो को सख्त निर्देश दिये गये कि अगर कोई भी महिला प्रार्थना पत्र देती है तो वह थाने व पिंक बूथ में प्राथमिकता दर्ज होनी चाहिए।

पैनल अधिवक्ता संजय मुदगल द्वारा बताया गया विद्धावस्था पेंशन, निराश्रित महिला पेंशन, पारिवारिक लाभ, महिलाओ व छात्राओ के कानूनी अधिकार व जमीन सम्बन्धित समस्याए, व सोशल मिडया की जानकारी दी गयी।

उपजिलाधिकारी मोदीनगर निखिल चक्रवती व तहसीलदार मोदीनगर रजत सिंह, वन स्टॉप सेन्टर इन्चार्ज दिपाली, पैनल अधिवक्ता संगीता व पैनल अधिवक्ता संजय मुदगल ने बताया की सरकार द्वारा चलायी जा रही अनेको योजनाओ के विषय में महिलाओ के कानूनी अधिकार की जानकारी दी। अगर किसी भी महिलाओ व छात्राओं को कोई भी परेशानी हो तो इसकी शिकायत आप वन स्टॉप सेन्टर यूनिट-2 मोदीनगर व पिंक बूथ मोदीनगर, मुरादनगर, भोजपुर, निवाडी व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गाजियाबाद कार्यालय मे कर सकते है। विचित्र कुमार असिस्टेंट लीगल एण्ड डिफेन्स काउंसिल अधिवक्ता द्वारा बताया गया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण महिलाओं किस प्रकार साहयता कर सकती है। महिलाओं व गरीब व्यक्तियो को किस प्रकार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से निशूल्क अधिवक्ता मिल सकते है। दीपाली वन स्टोप सेन्टर यूनिट-2 इंचार्ज द्वारा बालिकाओ के जन्म संबन्धित महिलाओ छात्राओं की योजनाओ की जानकारी दी। शिविर में नीलम वर्मा (पी0एल0वी0), शैली गोला कैस वर्कर, सुधीर वशिष्ठ अधिवक्ता, रेखा गिरी अधिवक्ता, मृदुल अधिवक्ता, किर्ती सिंह, अमित कुमार, रोहित ठाकुर, सपना, सुजल, राहुल आदि उपस्थित रहें।

- साक्षरता शिविर में अधिकारीयों को सख्त निर्देश दिये गये कि अगर कोई भी महिला प्रार्थना पत्र देती है तो वह थाने व पिंक बूथ में प्राथमिकता दर्ज होनी चाहिए